श्री

ठ म ठ स्तु स ग्र ह पु स्त क

जैन धर्मी श्रावक लोकांने भणवा वाचवाने अर्थें योग्य जाणीने नाना दादाजी गुंम्झणनें

"सौजन्यमित्र" छापायंत्रमांहे छपायोछे

संवत् १९४६

ओ पुस्तक पुना पेठ नानाकी आठे
भाई भगवानदाशजी केशर चंदजी नाहारकी
दुकान उपर मिलशी.

किंमत अग्रीच आना

॥ अथ श्री जैन छंद संग्रह प्रारंभः ॥

॥ अथ श्री भी भंजन पार्श्वनाथ छंद लिख्यते ॥

(॥ भुजंगी छंदनी चाल ॥) वारु विश्वनां देश काशी बिराजे, जिहां जान्हवी नीर गंभीर गाजे ॥ पुरी नाम वणारसी तिहां प्रसिद्धि, शोभा स्वर्गनी जिणे उठाली लीधी ॥ १ ॥ वर्णु सुं वखाणे कवि घाट तेहनो, से हु चित्त चाहे जोवा रूप जेहनो ॥ धराधीश तिहां खड्गधारी धरानें, पाले प्रेमशुं अश्वसेनाभिधाने ॥ २ ॥ वामा तेहनी गेहनी रूपे रंभा, शीलें सर्व नारी जीती ए अचंभा ॥ सदा सुंदरी ते शोहे चंद्र वयणी, सुती सेजमां एकदा मध्य रयणी॥३ ॥सुरलोक दशमां थकी जे सनूरे, प्रभु पार्श्व वामाकुंखे पून्यपूरे ॥ चतुर्थीदिने चैत्रनी कृष्ण पखें, वस्या गर्भवासें विशाखा सुरखें ॥४॥देवी चौद सुपणां तदा दिव्य देखे, महामोद पामी मानेते अलेखे ॥ जायो पोश मासें दशमी अंधारी, आखाविश्वनो जेह उद्योतकारी ॥ ५ ॥ मिले दिग्कुमारी सुरेंद्र मिलायो, गायो हूलरायो पूजीने वधायो ॥ वधंते प्रभु यौवने जाम जायो, प्रभावती राज कन्या प्रणायो ॥ ६ ॥ विषय भोग विलशी वस्या गृहस्थवासें, वरश त्रीशमें व्रत लीधुं उल्लासें॥ त्रीयाशी रात्रि मौने रह्या मुक्ति वासी, तपस्या करी शुक्ल ध्यानाभ्यासी ॥ ७ ॥ चोखे चित्त निरदोष चारित्र पाली, बहु कर्मना वृक्षना मूल बाली ॥ थया केवली चैत्रनी कृष्ण चोथें, देखे लोक अलोकने ज्ञान ज्योतें ॥ ८ ॥ मिली देवतायें महा मोदधारी, कर्यो त्रिगडो विश्व व्यामोह कारी ॥ स्वामी दिव्य सिंहासने बेठाशोहे, बारे परखदानां बहु मन्नमोहे ॥ ९ ॥ नवे नेहशुं एहने जे निहाले, त्रिषा ताप संताप ते दूर टाले ॥ अहो एक नजरे जिणे एह दीठो, मुने मानखो तेहनो भागें मीठो ॥ १० ॥ दीये देशना दीन बंधु दयानी, सुणो जैन वाणी

प्राणी पुण्य पामी ॥ लही दूर्लज मानवं ए शरीरं, मुशा कां गमोछो बुझो बोध हीरं ॥ ११ ॥ मर्दे जेह माता पड्या मोह पासें, धने जेह धाता विषयने विलासें ॥ मुंझया मूग्ध माया तणा फंद मांही, मिथ्या ते ग्रस्या शुद्धने ते न चाही ॥ १२ ॥ धरे धर्मने जे होइ धर्म धोरी, तजी कर्मने ते कापे कर्म दोरी ॥ जजी शुद्धने ते लहे शुद्ध हेतु, था य तेह मिथ्यातनो धूम केतु ॥ १३ ॥ वसी वासना जेहनी जैन वयणे, नाग्रे निरमलो तेहने कोइ नयणे ॥ जेहनां चित्त सिद्धांत मांहे रमेछे, किम तेह जूठा कहोनें जमेछे ॥ १४ ॥ मिथ्यातें लीना तेहने ते गमे छे, दोषी जीवना ते जिहां तिहां दमेछे ॥ फिरी लाख चोराशीना फेर मांहे, विना नाथ तेहने धरे कोण बाहे ॥ १५ ॥ जिणे जैन सिद्धांत नी युक्ति जाणी, कहोने कोही तेहने गमे अन्य वाणी ॥ हीरे जे हल्यो ओलखी हेत आणी, कहो किम ते संग्रहे काच प्राणी ॥ १६ ॥ देइ देशनाने प्रजु तीर्थ थापे, जग जंतु बंधुपणे बोध आपे ॥ मही मंडले विचरे जेम वायु. पुरुं जोगवी एकसो वर्ष आयु ॥ १७ ॥ मासें श्राव णें शैल समेत श्रृंगे, वश्या श्वेतषष्टी दिने मुक्ति संगे ॥ प्रजु जीड जं जन नांमे जजंता, जांजे जीडने सुख आपे अनंता ॥ १८ ॥ सेवो शु द्ध बुद्ध सदा बोध दाता, जजो जाव जके प्रजु जूत त्राता ॥ सेव्यो हेजशुं एह सहजें सधारे, पूज्यो प्रेमशुं पापना बंध वारे ॥ १९ ॥ वधे वंदतां संपदा जे वधारे, धरच्यू ध्यानमां सेवकां बांहे धारे ॥ अर्च्यो उ छुटे आपदाथी उगारे, स्तव्यो त्रिविधें जेह संसार तारे ॥ २० ॥ न म्यो नेहशुं जेह नवनिद्धि आपे, कीजे चाकरी तो चारे गती कापे ॥ जोतां जेहनी आदि कोइ न जाणे, कवि तेहना गुण केता वखाणे ॥ २१ ॥ नमो नाथ अनाथ सनाथ कारी, नमस्ते अरूपी बहु रू पधारी ॥ नमो बुद्धि शुद्धातमा सिद्धि जर्ता, नमो पारगामी नमो सौख्यः कर्त्ता ॥ २२ ॥ नमो मुक्ति दाता नमो तुं विधाता, नमो वि श्वनेता नमो तुं विख्याता ॥ नमो सर्व वेदी अवेदी नमस्ते, नमो सं

करो सर्वव्यापी नमस्ते ॥ २३ ॥ सेढी वेत्रवत्योपकंठे दिदारु, खें-
त हरीआलुं वसे गाम वारु ॥ राजे तत्र त्रेवीशमो तीर्थराय, जेहना
नामथी कोटि कल्याण थाय ॥ २४ ॥ धरणेंद्र पद्मावतीने पसाय, स
दा सेवना विघ्न दूरे पलाय ॥ उदयरत्न भाखे गाता पार्श्वस्वामी,
पूरी आजमेंतो नवेनिद्धिपामी ॥ २५ ॥ ॥

॥ अथ सरस्वती अष्टक छंद प्रारंभः ॥

(॥ हरिगीत छंद ॥) बुद्ध विमलकर नाव बुधवर, निरूप रम-
नी, निरखियें ॥ वर देय न बाला, पद्म प्रवाला, मंत्रमाला हरखियें
॥ स्थिर थानंभा अति अचंभा, रूपरंभा भलकती ॥ भजियें भ-
वानी, जगत जानी, राजरानी सरस्वती ॥ १ ॥ सुरराज सेवित, दे-
ख दैवत, पद्म पेखत, आसनं ॥ सुखदाय मूरति, माय मुरति, दुःख
दूरति निवारनं ॥ त्रिहुं लोक तारक, विघ्न वारक, धरा धारक, ध-
रपती ॥ भजियें भवानी० ॥ २ ॥ कोवियां कोपित, लोभ लोपित,
अवनि ओपित, ईश्वरी ॥ शंतोष धारन, विघन वारन, मदन मारन,
महेश्वरी ॥ खलदलां खंडन, छिद्र छंडन, दुष्ट दंडन, नरपती ॥ भ-
जियें० ॥ ३ ॥ शिव शक्ति साची, रंग राची, अन अजाची, यो-
गिनी ॥ मद झरन मत्ता, तरन तत्ता, धत्त भत्ता, धंगिनी ॥ जि
ह्वास्तपंति, मन रमंति धवल दंति, विरमती ॥ भजियें० ॥ ४ ॥ जलथ
ल जनानी, पवनपानी, मति बखानी, वीजली ॥ गिरवरां गाहन. वाघ
वाहन, सर्प साहन, शीतली ॥ हदहांक धारी, हत हजारी, धनुष धारी,
भगवती ॥ भजियें० ॥ ५ ॥ झणणाट झल्लरि, धिधिम धपवरि, रिरिरिरिवर,
खज्जियें ॥ धिधिधौकिधौं, गडदि धिधिक धिरतं, . धिधिक धौगडदी,
गज्जियें ॥ द्रांकिदौंदौं रुरुरु मतिद्रां त्तत्ताकि त्रांत्रां दमकती ॥ भजियें० ॥
॥ ६ ॥ रिरि रमकि रिमि रिमि, झिझिम झिमि झिमि ठमकि ठम
पग रच्चियें ॥ घम घमकि घम घम ग्रहणिक ग्रहणि, गमअति अम

ग नृत्ति मच्चियें ॥ तत थेइय तांनन मात माणन, अचल आनन द सती ॥ जजियें० ॥ ७ ॥ चव चक्र चालन, कटिक कालन, गर्व गालन, गंजनी ॥ विरदां विदारन, महिश मारन, दलिद्र दारन, जंजनी ॥ चरचिये चंडी, खलांखंडी मदन मंडी मलकती ॥ जजियें० ॥ ॥ ८ ॥ काबेकरे अष्टक, ढाल कसनक, विसन पृष्टक कज्जियें ॥ मणिमौलि मंडित, पढेपंडित. एअखंडित पेखियें ॥ दयासुर देवी, सुरांसेवी, नित नमेवी जगपती ॥ जजियें० ॥ ९ ॥ इति समाप्त ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ छंद प्रारंभः ॥

(दुहा) ॥ शारद माता सरस्वती, प्रणमुं तेहना पाय ॥ श्री शंखेश्वर गायसुं, जिम मुज आणंद थाय ॥ १ ॥ उपजे, आनंद अतिघणो, समरंता जिन राज ॥ छंद भेद भावें करी, गायसुं गरिब निवाज ॥ २ ॥ गरिब निवाज शाहेब सुणो, सेवकनी अरदास ॥ मोज करी महाराज तुम, आपो लील विलास ॥ ३ ॥ सुविलासी भगवंततुं, परता पूरण शार ॥ प्रत्यक्ष सुर तरु अवतर्यो, रिद्धि सिद्धि दातार ॥ ४ ॥ दातारी तुम सम अवर, में नवि देख्यो कोय ॥ देखंता सब दुःख टले, आनंद अधिको होय ॥ ५॥

(॥ छंद अडियल ॥) श्री शंखेश्वर साहेब दीठो, ते मुज नयणे अमिय पईठो ॥ दीसें मूरत मोहन गारी, ते मुजनें लागें अति प्यारी ॥ ६ ॥ आषाढ नामे समकित धारी, अतीत चोवीसी थयो उपगारी ॥ अष्टम जिन दामोदर वारें, पूछे ते मुजने मुक्ति किवारें ॥ ७ ॥ वलतुं जिनवर इणि परें भासे, पार्श्वनाथ वारें उद्धारें ॥ थाशो गणधर शिवगति गामी, पार्श्वनाथ गुरु अंतर यामी ॥ ॥ ८ ॥ आर्य घोष नामें गणधार, विनयवंत बहुगुण भंडार ॥ आवती चोवीशी चोथे आरे, पंचमीगति लेशो निरधारें ॥ ९ ॥

(॥हरिगीत छंदनी चाल॥) आषाढ श्रावक, जिसो पावक, कर्म व

ं दहवा जणी ॥ अतिभाव आणी, लाभ जाणी, निरखी त्रिभु वन धणी ॥ श्रीपार्श्वनाथनुं बिंब मनोहर, जैसो शशिधर दीपतो ॥ जागती ज्योत जिनंदकेरी, तेज तरणं जीपतो ॥ १० ॥ तिणे भ क्तिआणी, सुणी वाणी, सोहम सुरपति निजवरे ॥ ते पार्श्वनाथनुं बिंब मनोहर, इंद्र पूजे शुभपरें ॥ बहुकाल सूधी, निरविरोधी शि वदायक जाणी करी ॥ पूजे ते मनमां लाभ जांणी, इंद्र इंद्राणी हेत धरी ॥ ११ ॥ वैताढ्य उपर नमीविनमी, ऋषभ वारें ध्य- तेपणुं ॥ पूजीते प्रतिमां जन्मशुद्धी, उजियाल्युं कुल आपणुं ॥ इ- ते भीती सबलतेहनें, पार्श्वनामे सब टलें ॥ गुणवंत गिरुआ मोक्ष नां सुख, स्वरग सुख आवी मिले ॥ १२ ॥ वलि सोहम सुर पति तेह प्रतिमा, पूजतां, उल्लट धरे ॥ भवभीती नासन सुख वि कासन, निजनेहे पूजा जे करे ॥ वली सूर्य सुरिंद तेपण, जिनने वचनें हरखियो ॥ ते पार्श्वनाथनुं बिंब शिवसुख, दाइ निश्चल पद दियो ॥ १३ ॥

(॥ छंद ॥) बहुकाल लगेंते पूजे रीझे, मनभरि हरख अपार ॥ वली पद्मावती देवी प्रेमें, पूजे पुण्य भंडार ॥ वली धरणिंद्र नागकुमारे हरखें, निरखें जिम जगनाथ ॥ उलट बहु आणी मनमां जाणी, आपो ए शिव साथ ॥ १४ ॥ इणिपरें सुरपति सुरवर किन्नर, विद्याधरनी कोड ॥ जिननें पूजे पातिक धूजे, जे प्रणमें करजोड ॥ धरनारे मूके सप्तम टूंके, पूजे नाग कुमार ॥ ते कंचनबलनुं सहुयें जाण्युं सुरगिरिनें अणुहार ॥ १५ ॥

(॥ हारिगीत छंदनी चाल ॥) जब जरासंध मुकंद उपर, सैन सबलुं ला यो ॥ बलवंत नेम कुमार आगल, द्वारापतिते आवियो ॥ करे ; सबला नही निबला, गर्व मद भरपूरच्या ॥ गजथाट हारच्या रहे वारच्या, शत्रु सघला चूरच्या ॥ १६ ॥ तिहां कुंत बाण क ण खडगने, नाल गोला उच्छले ॥ धीराते पग पाछा नदे तिहां

कायर कंपे कलमलें ॥ इम युद्ध करतां क्रोध धरतां, हारे न कोइ जीते नहीं ॥ तव जरासिंधु क्रोध वश हुवो, मूके जरा अवसर लही ॥ १७ ॥ जव जरा धारच्या, सहुए हारच्या, श्रीपति मन चिंता वसी ॥ तव नेमनाथ जिणंद बोले, नारायण चिंता किसी ॥ कहे को स्वामी शीशनामी, सहुनें आवी जरा ॥ किम युद्ध कीजें जय वरीजें, कहोने श्रीनेमीश्वरा ॥ १८ ॥ तवकहे यदुपति सुणोश्रीपति, अष्टम तप तुमे आदरी ॥ धरणेंद्र साधो, मन अराधो, पार्श्वप्रतिमा हित री ॥ तस नमण जलसुं सींचत, मकर अवर चिंताकिसी ॥ धरणेंद्र साधी पार्श्व प्रतिमा, तिहां आणी उल्लसी ॥ १९ ॥ तस नमण नीरें सहु शरीरें, सुभट हुवा सज्जए ॥ जरासिंधु हारच्यो, चक्रमारच्यो श्रीपति सरियुं कज्जए ॥ तिहां पार्श्वकेरुं अति भलेरुं, भुवन कीधुं दीपतुं ॥ तिहां नगर वास्युं शंखपूर, सुरलोकने पण जीपतुं ॥ २० ॥

(॥ छंद अडियल ॥) श्रीशंखेश्वर पार्श्व सोहंकर, थापी श्रीपति गुण आगर ॥ पोहोतो द्वारामति विश्वेश्वर, शंखपुर माहें शंखेश्वर ॥ २१ ॥ छयासी सहस वरस इणें ठांमे, शंखेश्वर शंखसर गामे ॥ परतापूरे शिवगति गामी, ए प्रभु मेरो अंतरजामी ॥ २२ ॥ संवत इग्यार पंचाव वरसें, सज्जनसेठे मननें हरखें, निपायो प्रसाद उदारं, पाम्यो शेत्रुंजमो पारं ॥ २३ ॥ दुर्जन सल्य नामें भूपाले, धर्मवंतने अति सूकले ॥ कुष्ट दल्यो तस पार्श्व पसायें, विमान समान प्रसाद निपाये ॥ २४ ॥

(॥छंद॥) प्रसादकीधो सुजसलीधो, सीधो सवे तस काज ॥ प्रत्यक्ष रतरु सम निर्मल जिनवर, आपें अविचल राज ॥ सुरमणि समो वंछित पूरे, चूरे करम जंजाल ॥ सप्त फणामणि पास शंखेश्वर, परमेश्वर प्रणमित आल ॥ २५ ॥ में पूरव पुण्ये प्रभूजी पायो, साचो स एह ॥ देखतां दुःख सव दूर नाशे, वाधे धरम सनेह ॥ शंखेश्वर स अंतरजामी, शिवगती गामी देव ॥ सेवकनां साहेव काम समारो, यो चरणनी सेव ॥ २६ ॥ तुं चित्तमां वसियो, नवड सनेहें, गुणगेहें गु

तूठो आपे शिवपद संपद, सेवकनें अरिहंत ॥ परघोडा हाथी वली, मणि माणक भंडार ॥ धण कंचन रयणनी रास म तुं आपे किरतार ॥ २७ ॥ घरगोरी गोरी बहु गुणवंती, बा- रर प्यार ॥ मुख मीठुं बोले हियडुं खोले, डोले नाहिय लगा नजोमी आवासें मन उल्लासें, विलसें भोगअपार ॥ तुम नामे मन कामी, बहुला अरथ भंडार ॥ २८ ॥ शिरमुकट मनोह ।। सुंदर, आभुषण अतिसार ॥ एहवी ऋद्धि दीसें, हियडुं ते सवि तुम उपगार ॥ कलिकाले प्रगट्यो साचो सुरतरु, प- रणहार ॥ प्रभु पूजी प्रणमी नयणें निहाली, सफल कियो : ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥) सफलकियो अवतार मुज, देख्यो श्री जिनराज ॥ दुःख दूरे गया, सीधा वंछित काज ॥ ३० ॥ मूरत मोहन वेलडी, नयण निहाल ॥ खिणचित्तथी नवि विसरें, ए त्रिभुवन प- ॥ ३१ ॥ चिरंजीव जगदीशतूं, आशा पूरण हार ॥ आश ो पूरवो, उतारो भव पार ॥ ३२ ॥ दोलत दाई देखियो, श्री ार पाश ॥ सुख सौभाग्य संपति घणी, आपे लील विलास ३ ॥ अरज अमारी सांभलो, मनमां भरो सनेह ॥ दरसन दीजे ाम मोरानें मेह ॥ ३४ ॥ पार्श्वनाथ प्रभु समरिये, प्र- भाण ॥ वामा नंदन पूजियें, दिन दिन चढते मंडाण ॥ ॥ पार्श्वजिनेश्वर गावतां, उपजे अति आणंद ॥ ईति तीत नहीं, नित नित परमाणंद ॥ ३६ ॥

ालश ॥ हरिगीत छंद ॥ इम त्रिजग नायक, मुगिति दायक, पार्श्व श्वर धणी ॥ शशि जलधि संवत वेद बाणज, गायो युक्ति भरि घणी ।वण वद तेरस मनोहर, दिवस स्तवियो सारए ॥ श्री लावन्य य उवजाय सेवक, नित विजय जयकारए ॥ ३७ ॥ इति समाप्त ॥

॥ अथ श्री मणिभद्रजीको छंद लिख्यते

श्री मणिभद्र सदा समरो, उर बीचमें ध्यान अखंड धरो ॥ जय जयकार करो, भजियां सहु नित्य भंडार भरो ॥ १ ॥ जे करे नामज लियां, आनंद करे देव आशकियां ॥ सौभाग्य वधे ज हरस गुणो, दिल सेव्या दे प्रभु जश दुगुणो ॥ २ ॥ अरियण र लगा भागे, विरुआ वैरी जन पाय लागे ॥ संकट शोक वियोग उण वेला आय सहाय करे ॥ ३ ॥ भूत भयंकर सहु भागे, ज गणी सायणी नवि लागे ॥ वाय चोराशी जाय अलगी, लखमी स य मिले वेगी ॥ ४ ॥ गुळ पापडियां गुरुवार दिने, लापसियां शुद्ध मने ॥ धूप दीप नैवेद्य धरो, आठम दिन पूजा आवश्य करो । जेहने दिनप्रति जाप सदा, तस सुपनांतरमें प्रत्यक्ष कदा ॥ भविय हु जाये आपदा, कोउमणा घरे रहे न कदा ॥ ६ ॥ मुहमद मुमें जस करियो, गुण सायर जिस्यो तुमें गुण भरयो ॥ श्री दीन दयाकरो, शिर उपर हाथ दियो सखरो ॥ ७ ॥ भवियण जे नशे, कारज सिद्धि आपणी करशे ॥ पूज्यां पुत्र वधे दुगणा, वातें कदि रहे नाहि उणा ॥ ८ ॥ श्री मणिभद्र मनमें ध्यावो, संपति बहु वेगें पावो ॥ लक्ष्मी कीर्त्तिवर आप लहे, शिवकीर्त्ति एम सुजस कहे ॥ ९ ॥

॥ अथ श्री मणिभद्रजीनो छंद लिख्य

(॥ दुहा ॥) सरस्वती भगवती भारती, सुमति सुमति दातार ख मंदिर तुं रमे, समय सुधा आधार ॥ १ ॥ गंगागंगें ज णी, कमलाकर कमलेण ॥ जह तह तुह मुख सोहियें, समय मिय अमिएण ॥ २ ॥ काछिपि कर कमले करे, चरणे रण णकार ॥ मणिभद्र गुण गायवा, जननी करूं जुहार ॥ ३ ॥

(॥ अडियल्ल छंद ॥) शारद शारद शुभ्र मति देवी, कविकुल व

तुं मन धरेवी ॥ समय समय प्रत्यें सार करेवी, तोरा गुण गाउं समरे वी ॥ ४ ॥ मणिभद्र विरभद्र विख्याता, वरदायक बलुआ विख्याता ॥ वार वार वीरा वीनविये, संतति कारण तूं कवि स्तविये ॥ ५ ॥ तुज तनु तेज दिवाकर दीपे, महीयल महिमा तुज नवि छीपे ॥ त्रिभुवन राजा तुं जग राजे, तोरा गुण गरुआ जग गाजे ॥ ६ ॥ चाह करी चाहुं तुज सेवा, दयावंत दीपक तुं देवा ॥ समय सुधारस झीलण हारा, धींगड भुंबड तुज परिवारा ॥ ७ ॥ भभंकर भूतल भूत नसाडे, शाकणि डाकणि फंदे पाडे ॥ रंगे रामा रास रमाडे, ग्रहगण तारा कोटि भमाडे ॥ ८ ॥

[॥ हाटकी छंद ॥] तुं आपे थापे, दुर्मति कापे, संतापे रिपुवृंद ॥ सहि सेवा रसीया, निकटा वासिया, हरि हर चंद्र अनंद ॥ तुज तेजे हसियो, व्योमें वसियो, दिनकर रहे संकंत ॥ गुणवंत अनंता, हास हसंता, विलसंता, उलसंत ॥ ९ ॥ मयगल मत्तवाला, तरल तुखारा, रह राजी राजंत ॥ मलपंती घरणी, पतिमन हरणी, चंपक वरणी कंत ॥ तुम नामें पामें, भूप भलेरा शिर नामें उल्लसंत ॥ सुविनितापुत्ता, विबुध वंदिता, वंछिता बलवंत ॥ १० ॥

(॥ छंद चाल ॥) घम घम घमके घूघर माला, चंचल चपल चलावे चाला ॥ करी शरभे करवाल कराला, वयरी हणवा तुं विकराला ॥ ११ ॥ सजन जय कर जय सुकमाला, तनु तेजें करि झाक झमाला ॥ कटि कंदोरा सोवनीयाला, नयन कमल दल अति अणियाला ॥ १२ ॥ हार हिये हीरे हेजाला, करुणावंत दयाल मयाला ॥ सुर छत्रीशा कोटि सिंगाला, तुं शिरदार तिहां भूपाला ॥ १३ ॥ कंठ ठवें मणि मोती माला, मद तंबोल भरच्या गल गाला ॥ मद भरी माले ज्युंमत वाले, ठमकावे पग पावडियाला ॥ १४ ॥ पय परठे पद्‌माशन वाला, घूमत घूमत घूमतियाला ॥ जन मन मोहन मोहनीआला, जापजपे जाली जप माला ॥ १५ ॥

[॥ कामिनी मोहन छंद ॥] चव्यदेवाण मज्जि मिजोह जोहए, जेहने नामे घर सरग विदोहए ॥ जास जसजगत जन जानति बोहए, मणिचद्दोइ सो इसरो सोहए ॥ १६ ॥

[॥ रुडिला छंद ॥] राजे राजेरे रसाल, मुदमदनविसाल, करो करुणा रसाल, सतत सही ॥ दुह करो अनिवार, वरवचन विचार, सम समय संचार, हियें मीअय लही ॥ पुत्र कलत्र अपार, जय सेवक साधार, दियो दोलत दुआर, हिये हेज धरी ॥ महि मंडल मंडन, खल खलक खंडन, चूत जैरव जंडन, सही सुमय वरी ॥१७॥

(॥ अडियल छंद ॥) वादविवादे जे जन ध्यावे, सोनर बहुपरें संपद पावें ॥ निर्मल नाम तुमारुं जपियें, अशुज कर्म मति तत-क्षण खपियें ॥ १८ ॥

॥ (हाटकी छंद ॥) तुं राचे नाचे, बहुपरें माचे, जाचे तुज जाचक ॥ विविधायुद्धवंता, वासवसंता, ऊळके जिम पावक ॥ दरबारे वसिये, तोरें हसिये, घसिये चंदन रंग ॥ लेइ फूल अमूला धोला पीला, चरचीजें तुज अंग ॥ १९ ॥

(॥ अडियल छंद ॥) साहिब तूंहि सदा सुखकार, मयाकर तुंहि पिता पति तार ॥ शिवंकर तूहि सदा साधार, पयंपुं एम हुं वारंवार ॥२०॥

(॥ छपय छंद ॥) मणिचद्र सुखकरण, सयल संसार वदीतो ॥ दोलत दीये दयाल, दैत्यपति जेणे जित्यो ॥ जयकारक जयवंत, जगतपाति पातक नासे ॥ तनु तेजें ऊलकंत, संतन सतति सुविलासे ॥ जसराज नरराज, तनय निपुण निसुणो सहि ॥ गुण गण, गुणता गोरियां, लाल कुशल लक्ष्मी लही ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमणिचद्रजीको छंद लिख्यते ॥

[॥ चोपाइ ॥] सुरपति नित्य सेवित शुजखाति, विबुध वृंदवंदित ब्रह्माणी ॥ अधिकानंद हृदयसुं आणी, प्रणमिस हुं सारद सपराणी ॥१॥ विमल वचन मुज द्यो वरदाता, गुणनिधि गोरडीया गुण गाता ॥ चू-

तल अन मोहन मुनि भ्राता, त्रिभुवनमे खेतल विख्याता ॥ २ ॥ माणिभद्र महि मंडल मंडन, खगधारी खेले खल खंडन ॥ गोरडियो दुर्जन जन गंजन, भक्त वत्सल भयभावठ भंजन ॥ ३ ॥

(॥ दुहा ॥) वीर सुणो एक वीनती, सेवकनी सुविचार ॥ परि परि पिशुन पराभवे, तेहेनो करो निस्तार ॥ ४ ॥ अभिमानी अकयागरा, अपजश करा अपत्य ॥ कपटी कूड कुबुद्धिया, निर्दय निखर निसत्य ॥ ५ ॥ माणिभद्र माता पिता, अडवडियां आधार ॥ खेत्रपाल धरि खंतशुं, शत्रु करो संहार ॥ बावनवीर मांहे सबल, जग जागतो असवाय ॥ प्रभु मनवंछित पूरवो, गुणियन जन गुणगाय ॥ ७ ॥

(॥ त्रिभंगी छंद ॥) गुण गाउं भगतें, एक चित्तें, खरिय खंतें ताहरा ॥ विराधि वीरा, धरणि धीरा, तूंहि भैरव किन्नरा ॥ तुंहि बरडो, तूंहि बाबर, तूंहि चोवट चाचरा ॥ श्रीमाणिभद्र सुभद्र जयकर, शत्रु संहर माहरा ॥ ८ ॥ महाकाल तूंही वीर हर सिद्ध, हरडो तुंही खोडियो ॥ रगतियो जागड तूंहि चामुड, मांकडो भंत्रोडियो ॥ आगियो आदे ठाम ठामे, पीठ प्रसिद्ध तुज खरा ॥ श्री माणि० ॥ ९ ॥ शाकिनि डाकिनि भूत व्यंतर, राक्षसी सिकोत्तरी ॥ तुज नामे नाशे दोषत्रासे, दुष्ट नहु निरखे फिरी ॥ चोवटे चाचर तुंहि खेले, शकति खेले शंकरा ॥ श्री० ॥ १० ॥ तूं विषय वाटे गिरिय घाटें, जलधि जल पूरें वह्या ॥ नल अनल संकट विकट कटके, आदमी जे दुःख लह्या ॥ तुज नाम जपता कुशल खेमें, प्रेमशुं आवे घरा ॥ श्री० ॥ ११ ॥ षट्भुजा भय हर, खडग विषधर, पास पाणि विनाकए ॥ षट्वांग शुरु कपाल माला, डमके डमरु डाकए ॥ कल करावे करतो धरणी रमतो, वैरि दमतो आतुरा ॥ श्री० ॥ १२ ॥ पाय घुमे घूघर, जोग जटधर, हाथ खप्पर वरतरां ॥ ब्रह्मांड पिंड प्रचंड नवखंड, अवनि जोवे खगधरा ॥ कैलाश शिखरे समुद्रतीरे, दशो दिश तुं खेचरा

॥ श्री० ॥ १३ ॥ जिमुत नील समानरूपं, तव स्वरूपं कुण ल हे ॥ सुर असुर मानव देव दाणव, आण ताहरि शिर वहे ॥ तुं मंत्र मूली यंत्र तंत्रें, चंद्रमा रवि शुभकरा ॥ श्री० ॥ १४ ॥ दीवान तुंहि अरज वेगी, तुंहि काजी अदल तुं ॥ तुंहि चकिता तुंहि मेहेता, तुंहि मीरां पटिलतुं ॥ ते जणी तुजने कहुं खेतल, चित्तधर तूं सुरवरा ॥ श्री० ॥ १९ ॥ नवनिधि ऋद्धि समृद्धी दाता, जगत नेता तुं सदा ॥ वंछित पूरण कष्ट चूरण, सुकवि टाले आपदा ॥ तुं पिता माता, तुंहि त्राता, नाथ स्वामी सहोदरा ॥ श्री० ॥ १६ त्रिहुं भुवन हिंडे यक्ष केडें, फिरे सेवा सारता ॥ पारिकी साधु असाधुनी तुं, लहे जगनी वारता ॥ जागति मूरति भवन ताहरि, पाय पूजें सुरनरा ॥ श्री० ॥ १७ ॥ जे मरम बोला, लुब्ध लोला, विकल लवता मानवी ॥ परवित्तन तोषा तरत रोषा, वेदवाणी नव नवी ॥ कलि करण माता कपट राता, कुमति दाता अनुवरा ॥ श्री० ॥ १८ ॥ विण गुणइ वैरी जन जंजेरी, आल बोले अणछता ॥ करग्राहि असिवर छेद अरिशिर, वार वयरी व्यापता॥ उपगार कीधो मनन जाणे, गार्वे गुनही गोबरा ॥ श्री माणि० ॥१९॥ परगुण नबोले शीशडोले, भुंडपरें भमता भमें ॥ परऋद्धि देखि दुःख अलेखि, साधु सज्जन जे दमे ॥ बरबरेबोकड साद बरके, हरामी हरकत करा ॥ श्री मा० ॥ २० ॥

॥ कलश ॥ (छप्पय छंद ॥) क्षेत्रपाल भुपाल, आप जे मांग्या मुजने ॥ समरथ साहिब जाणी, याचना कीधी तुजनें ॥ करतले ग्रही त्रिशूल, कंध कांपे कंटकना ॥ ऋद्धि सिद्धि घर आण, कोड पूरे मुज मनना ॥ मगरवाडापूर मंडणो, अतुली बल अशरण शरणा ॥ राजरत्न पाठक वीनवे, श्रीमाणिभद्र जय जय करणा ॥ २१ ॥

॥ अथ श्री जीरावला पार्श्वनाथनो छंद लिख्यते ॥

[॥ चोपाइ ॥] जीरावलो मंडण जे पास, तूं तो त्रिभुवन लील विलास

॥ सुणि वीनती छोडो अव पास, हुं छुं देव तुमारा दास ॥ १ ॥ चउगति मांहे गाढो रह्यो, मानम अव बाधो जल कह्यो ॥ महिमंडल ए दर्शन हुवा, बोले वचन सवे जूजूआ ॥ २ ॥ एक अणे अवकां निगमो, नित्य उठी नारायण नमो ॥ एक अणे ईश्वर देवता, मन वंछित लहियें सेवता ॥ ३ ॥ एक अणे सव छोडो हेव, एक ज सेवो सूरज देव ॥ एवा बोल बोले एक लक्ष, अणे जइ एक पूजो जक्ष ॥ ४ ॥ जग मांहें जग जोया घणा, बोल सहु था पे आपणा ॥ धर्म तणो हुं अर्थी थयो, देव परीक्षा करवा गयो ॥ ५ ॥ पोहतो हरि मंदिर धस मस्यो, कौतुक देखो हैडे हस्यो ॥ नारी सरिखा देव मोरार, बेठा दीठा अवन मझार ॥ मुज मन मांहे चिंता वसी, देव थया तो नारी किसी ॥ बेजमइया दीठा जिणवार, हुं लाज्यो नव रह्यो लगार ॥ ७ ॥ हरिना भुवन थकी नीकली, गयो ईश्वरने देहेरे वली ॥ मूरति विण पण दीठी नवी, एक जलधारा जोए ठवी ॥ ८ ॥ ते उपर मांड्यो आकार, ते कहेतां मुझ लाज अपार ॥ तास जगत कहे एहिज देव, पूजी प्रणमी कीजें सेव ॥ ९ ॥ चतुर पणेमें चिंत्युं ताम, पय पखालि क्यां करुं प्रणाम ॥ अंग पखाली नवि रंग लिगार, कंठ नही किम ठविये हार ॥ १० ॥ नाक पंखे क्यां गूगल धूप, शोहे देवनुं इश्युं सरूप ॥ अलवेसुं ईश्वर परिहरी, हैडे वली विमासण करी ॥ ११ ॥ सूरज देव सहूको कहे, ते आपद घणेरी सहे ॥ दिवस मांहे उगे आथमे, जन्म मरण दुःख एम निगमे ॥ १२ ॥ यक्ष शेष देवी देवला, देखी चित्त न बेठो भला ॥ हिंस्या द्रोह करावे घणी, शीओलंग कीजे तेह तणी ॥ ॥ १३ ॥ देव न देखुं तेहवो कोय, जेहने सेवे शिव सुख होय ॥ मुझ मने आरति अति घणी, भेट थइ तव सह गुरु तणी ॥ ॥ १३ ॥ में वंछ्या जिनशासन सार, जिन चोवीश सुगति दाता

र ॥ पूरव पुण्ये प्रगटयुं कर्म, दयामूल जाण्यो जिन धर्म ॥ १५ ॥ तेह तणो में लाधो लाग, पाम्या पास तुमारा पाग ॥ चिंतामणि कर चडियो आज, मनवंछित सहु सरिया काज ॥ १६ ॥ ताहरा गुणहुं पार न लहुं, तुज तोले बीजो कोण कहुं ॥ अवर देव तु म अंतर घणो, विगतें बोल बे चार ज मुणो ॥ १७ ॥ जेवडो अंतर लुण कपूर, जेवडो अंतर खजवा सूर॥जेवडो अंतर सरसव मेर, जेवडो अंतर उवाटें शेर ॥ १८ ॥ जेवडो अंतर व्यंतर इंद, जेवडो अंतर तारा चंद ॥ जेवडो अंतर भूरती दास, लच्छी हणिने लील विलास ॥ १९ ॥ जेवडो अंतर सिंह शीयाल, जेवडो अंतर गोल वियाल ॥ जेवडो अंतर मृगने उंट, जेवडो अंतर पुण्यवंतने खुट ॥ २० ॥ जेवडो अं तर बगला हंश, जेवडो अंतर कानड कंश ॥ जेवडो अंतर रावण राम, जेवडो अंतर ठाम कुठाम ॥ २१ ॥ जेवडो अंतर बाजारि कू र, जेवडो अंतर कायर शुर ॥ जेवडो अंतर राणी दास, जेवडो अंतर दहींने छाश॥२२॥जेवडो अंतर रायण बोर, जेवडो अंतर माणस ढोर॥जेवडो अंतर मूरख जाण, जेवडो अंतर खर केकांण ॥ २३ ॥ जेवडो अंतर साखर चीर, जेवडो अंतर जलने खीर ॥ जेवडो अंतर कोयल का ग, जेवडो अंतर मूकड साग ॥ २४ ॥ जेवडो अंतर मणिने का च, जेवडो अंतर कूडनें साच ॥ जेवडो अंतर हीरे कांकरे, कस्तु रीने लाख बोरडे ॥ २५ ॥ जेवडो अंतर गोलने गली, जेवडो अंतर त रुवर सली ॥ जेम रयणायरने छीलरूं, काम कुंजने किहां ठीकरूं ॥ ॥ २६ ॥ एवडो अंतर देव अनेक, धर्मी जन मन धरो विवेक ॥ चडते चडे जिनवर जोय, पडते अवर देव पण होय ॥ २७ ॥ चिहुंदिशी चो प रमे चउसार, त्रिभुवन दीपक देव दयाल ॥ तुं जेच्यो तो अवर किम नमुं, अमृत लइ आछण किम जिमुं ॥ २८ ॥ पामी कल्पद्रुमनो साथ, हुं केरडे नवी वाहुं हाथ ॥ तुं दीठो जिनवर जगदीश, अवर देव किम नामुं शीश ॥ २९ ॥ तुमविण भव सायर रडवड्यो, मद मच्छर मायायें

नड्यो ।। शी विनंती करुं तुज बहु, कह्या पखे तुं. जाणे सहु ।। ३० ।।
ताहारो नाम निश दिन परहरी, अवर देवना बोल आचरी ।। रोष म
धरजो कोय लगार, देव खरा जे मुगति दातार ।। ३१ ।। हर ब्रह्मा ह
रि ईश्वर सोय, छए दर्शनना देवज कोय ।। सेव्यो आपे शिवपद ताम,
त्रएय काल तस करुं प्रणाम ।। ३२ ।। अमिय सरिखो मीठो आज,
तुं नयणे दीठो जिनराज ।। हेला मुज मन वंछित फल्या, दुर्गतिना दुःख
दूरे टल्या ।। ३३ ।। तुज नामे सब संकट टले, भूत प्रेत व्यंतर नवि
छले ।। तेहनां नासे विषम विकार, तुज नामें नित जय जय कार ।।३४।।
तपगच्छ नायक अविचल चंद, श्री सागरगछ तणा सुरिंद ।। श्री सोमदेव
सूरि सोहे सार, सोमविजय सूरि वर गणधार ।। ३५ ।। सोम रत्न पंडित
जे राय, ते सिंह गुरुना प्रणमी पाय ।। तुंज सवायो त्रिभुवन धणी,
पूरो एक इछा मन तणी ।। ३६ ।। रिद्धि रमणी नवि मागुं राज, कौ-
तक वेद मंत्र नही काज ।। एकज अवागमण निवार, मुजने दुःख सागर
उतार ।। ३७ ।। हुं आव्यो सरणे तुम तणे, राखो अंग उलट आपणे ।।
मुनि लावण्यासमय एम भणे, तुम तुठे नवनिधि आगणे ।। ३८ ।। इति ।।

।। अथ श्री सारदाजीनो छंद प्रारंभः ।।

[।। दुहा ।।] वीणा पुस्तक धारणी,ब्रह्मा पुत्री माय ।। जे गुण हुं
अक्षर जपुं, ते तुम करो पसाय ।। १ ।।

(।।छंद।।) कर वीण वजावे, नाद सोहावे, रंग अनोपम रूप भरे ।। से-
वक गुण अप्पे, विद्या थप्पे, दारिद्र कप्पे, दुंद भरे ।। कास्मीर व
संती, रंग हसंती, देश विदेशें दीपंती ।। कविपुव्वपयंपे. ब्रम्हा पुत्री,
जग जयवंती सरसत्ती ।। १ ।। सिणगार समके, नेउर वके, जलकत
जाली सही श्रवणे ।। मुक्ता फल हारं, कंठ अपारं, कजलसारं नतू न
यणे ।। पद्मासन सोहे, त्रिभुवन मोहे, भलपण दीसे जगवंती ।। क-
वि० ।। २ ।। शिर राखडी जलके, चूडी खलके, दोरी लहके फूदाली ।।
कर कमल सुरंगी, पुस्तक संगी, हाथ बीजोरी जपमाली ।। खीरोद-

क षवड्या, पहेरी पटोला, मयगलनी परें मालंती ॥ कवि० ॥ ३ ॥ सरसति माता, संपति दाता, त्रिभुवन ध्याता तुज जणी ॥ मन आश्या पूरे, दारिद्र चूरे, सदा सरूपी शोभ वणी ॥ जे गुण तुज गावे, आइ आवे, सिह वाहने शोभंती ॥ कवि० ॥ ४ ॥ तुं आदि कुंआरी, त्रिभुवन धारी, नीले वरणे नाछंती ॥ पंडित पंचोली, दीसे भोली, भाटे थाटें भाछंती ॥ घसी चंदन लावे, खूप रछावे, अगर कपूरें राछंती ॥कवि० ॥ ५ ॥

कलश ॥ ब्रह्मा विष्णु महेस, अविक एक मन जंपे ॥मूरख दानव देव, तोय भय भ्रांतें कंपे ॥ सुरनर गणगांधर्व, कमल करी पूजा रचावे ॥ पंचोली पंडित, घसी चंदन उर लावे ॥ वाहन हंस कवि पुन्यकहे, आराधे योगी यती ॥ त्रिहुं भुवने नाथ तारण तरणं, जय जय देवि सरस्वती ॥ ६ ॥ इति सारदाजीनो छंद संपूर्ण

॥ दुहा ॥ अंबे अंबे जेकरे, सदा सोहेलो होइ ॥ दुःख भंजे दारिद्र हणे, वैरी न गंजे कोइ ॥ १ ॥

॥ अथ शारदामातानो छंद प्रारंभः ॥

॥ सरस वचन समता मन आणी, उँकार अक्षर पहेलो धुर जाणी ॥ आलश अलगो दूरें छंडि, त्रिसला नंदन अंगें मंडि ॥ १ ॥ सरस्वति सरस वचन हुं मागुं, ताहारुं कवित्त करी पाय लागुं ॥ तुज गुणे मंज्यो उक्रम आणी, खजूरडे माडी तुं जाणी ॥ २ ॥ हरख्यो ध्यान धरुं परभातें, सोंहणे वाचा दीधी राते ॥ तव मन मांहे चित्ता चूकी, पाए लागुं आलश मूकी, ॥ ३ ॥ तारा गुण पूरा कोण केहेशे, तुज तूठे मुज मन गहगहसे ॥ बालूडो जे बोले कालुं, ते मातानें लागे वालुं, ॥ ४ ॥

(॥ छंद ॥) तुं गय गमणी चंदा वयणी, कटि तटी लकी सिंहलहियें ॥ अंगुली अनोपम नख निरूपम, घणु वखाण किश्युं कहियें ॥ ५ ॥

अगुर सवारें जेहने प्रत्यक्ष, सोंहणे आवी वात कहे ॥ तिण वाते त्रा-
ठो जाये नाठो, जाड्यपणु जग किहां रहे ॥ ६ ॥ तुं शक्तिरूप
माडी नवि सलके, चामर छत्र शिर उपर झलके ॥ झगमग झगमग
ज्योति विराजे, ताहारुं कवित्त करुं ते छाजे ॥ ७ ॥ दंत पंतिनी
मांडी ओली, जाणे बेठी हीरा टोली ॥ तिलक करुं कस्तुरी घोली,
जीह जाणे अमीरस गोली ॥ ८ ॥ काने कुंडल झाकझमाला.
राखडीयें ओपंति माला ॥ हंसासनी सोहे सुविमाला, मुक्ताफलनी
करी जपमाला ॥ ९ ॥ नकफूली नाके ते रूडी, कर सलके सोनानी
चूडी ॥ दक्षण फालि अंग विराजे, अंजं बोले तंतं छाजे ॥ १० ॥ ता
हारी वेणे वासग वसियो, ते पाताले जइने वसियो ॥ रवि शशि
मंडल तारा जाणु, ताहारुं तेज कोणे न खमाणु ॥ ११ ॥ रामत क्री
डा करती आली, ध्यान धरुं पद्मासन वाली ॥ पाय झांझर घूघर घ
मके, देवकुसुम पहिरया ते महके ॥ १२ ॥ चार भुजा चंचल चतुरंगी,
मुख अरोगे पान सुरंगी ॥ कंचू कशण कशी नवरंगी, गौर वर्ण ज्युं
सोहे गंगी ॥ १३ ॥ ब्रह्म सरूपी पुस्तक वांचे, नव खंडे तूं नाटक
नाचे ॥ गगन फिरे लही हाथें कमंडल, वीण वजावे रंग रमंडल ॥१४॥
ठाठो मुरख कांइ न लेता, तुज नामे ते केली करंता ॥ वडा क
विश्वर कलियुग मांहे, दडी उछाली कवित्त ने चाहे ॥ १५ ॥ तुं
वीर भूवन पाछालछे देहरी, लेहेती मांहे देती फेरी ॥ मेंदीठी तु
ज उभी हेरी, तू अझारी नवल नवेरी ॥ १६ ॥ हेमाचार्यने तू
बुठी, कालीदासने तूंहिज तुठी ॥ अनुभूती शन्यासी लाधी, मुनी
लावण्य समयें तू साधी ॥ १७ ॥ वृद्धवादि दो कर पण आवी.
कुमार पाल मुख तूहीज भावी ॥ मूरख जटनो करचो तमासो, ब-
प्पभट सूरि मुख वासो ॥ १८ ॥ अजयदेवने सोंहणं रातें, मलि-
यागिरें जाणी परभातें ॥ वर्द्धमान सूरि परसिद्धो, सूरि जिनेश्वरनें
वर दीधो ॥ १९ ॥ माघ कवीश्वरनें मन मानी, धनपालथी न र

ही तूं ज्ञानी ॥ रामाजोजें जलि जवाडी, सुरनर विद्याधरे रमाडी ॥ २० ॥ तेज रूप चाले चमकंती, महियल दीसे तूंहिं जमंती ॥ तारी लीला कोइ नवि पाले, तूंत्रिजूवनमां एकलडी माले ॥ २१ ॥ सूता काविने तूंहिं जगावे, मंत्राक्षर पण तूंहिं दिखावे ॥ काम रूप तूंकाली देवी, आगें देव चले तुज सेवी ॥ २२ ॥ त्रण रूप धारे ब्रह्माणी, आदि जवानी तूं जग जाणी ॥ तूं-जगदंबा तूंहिं गुण खाणी, ब्रह्म सुतातूं ब्रह्म वखाणी ॥ ॥ २३ ॥ तूं जैरव तूं त्रिपुरा चाली, ज्वालामुखी तूं योगण जाली ॥ अलवे उजी तूं अंगज वाली, नाटक छंद बजावे ताली ॥ २४ ॥ छपनकोड चामुडा आई, नगर कोट तूंहिज माहामाई॥ सासन देवी तूं सुखदाई, तूंहि अंबा तूंहिज अंबाइ ॥ २५ ॥ तूं पद्मा तूंहिज वरदाइ, तूं श्री माता तूं शुत दाई ॥ तूं जारती तूं हिं जगवंती, आदि कुमारी तूं गुण सती ॥ २६ ॥ तूं वाराहि तूं हिज चंडी, आदि जवानी तूंहिज मंडी ॥ तुजविण नाणुं पण न वि चाले, लक्ष्मीने शिर तूंहिज माले ॥ २७ ॥ हरिहर ब्रह्मा अ चारिज होइ, ताहरी सेव करे सहु कोइ ॥ देश देसंतर कांइ ज मियें, अडसट तीरथ फल तुज नमीये ॥ २८ ॥ मनवंछित दाता मतवाली, सेवक सार करो संजाली ॥ घणुं किशुं कहुं वाली वा ली, वांकी वेला तूं रखवाली ॥ २९ ॥ तूं चालक तूं चाचर रा णी, तूं नीलांबरनी धणी आणी ॥ तूं चपला तूं चारण देवी, खो डि यार विषहर समरेवी ॥ ३० ॥ वाणी वर मांगुं वर दाइ, तूं आवडी तूं मावडी आई ॥ तूं देवल तूं जलीआइ, तूं विरुडी तूं चखडाई ॥ ३१ ॥ तूं देवी में प्रत्यक्ष दीठी, जाणु हुं तूं मुज-नें तुंठी ॥ वात करें तुं प्रत्यक्ष बेठी, महारे तूं मन जीतर पेठी ॥ ३२ ॥ छल व्यतर तुजनामे नाशे, जैरव डाकण अलगा वासे ॥ विषम रोग वयरी दल जाजे, तूं सबली सबलासुं गाजे ॥ ३३ ॥

कविता कोडी गमे करे जोई, ताहारो पार न पाम्यो कोई ॥ आदि मंजू बेठी तूं सोहे, तुज दीठे संघलो जग मोहे ॥ ३४ ॥

(॥कलश॥) सललित सरस साकर समी, अधिक अनोपम जाणि ॥ विनय कुशल पंडित तणी, करी सेवमें लाधी वाणि ॥ ३५ ॥ कविशांति कुशल उलट धरी, निज हीयडामां आणि ॥ कर्यो छंद मनरंग ओंकार, समरी सारदा वखाणी ॥ ३६ ॥ तव बोली शारदा ज्युं, छंद कीधुं जळी जर्के वाचा माहारी ॥ हुं तूठी में वर दीयो लील करी, आश्या फलशे ताहरी ॥ ३७ ॥

॥ अथ श्री शनीश्वरजीनो छंद प्रारंभः ॥

(॥ चोपाइनी देशीमां ॥) सरसति सामणि मति द्यो सदा, अलिय विघन नवी आवे कदा ॥ नयरि उजयणी विक्रम राय, सभापूरीने बेठो ठाय ॥ १ ॥ जोतिषिया सभा मांहे जाण, नव ग्रहनां ते करे वखाण ॥ एक कहे शनीश्वर अति क्षुद्र, देखाडे प्राणीने रूद्र ॥ २ ॥ शनी सन्मुख जो होये एक, प्राणी सुख तो जाणे अनेक ॥ ते सवि बल जन जाणुं किणु, बल सबलुं शनीश्वर तणु ॥ ३ ॥ विक्रमशुं बोले ज्योतषी, शनी क्रूर सांभल नृपती ॥ ज्या रे ए सुत जन्मसे माय, नील वरण तनु जलकी काय ॥ ४ ॥ निजदृष्टी पद साहमी जाय, पग रहित ते पंगुल थाय ॥ नीच लोचन जोवे सारथी, हूओ पंगुल तस पेखण थकी ॥ ५ ॥ रथ दोय जूता तुरिय विचार, तस उपर दृष्टी तोखार ॥ ते नंदन निसुणी ते वात, कुदृष्टी कीधो सूरज तात ॥ ६ ॥ पिप्पलाद नयरी अभिराम, मानतुंग मुनिसर नाम ॥ लंकधणी दशकंधर जोय, शनीश्वरेते नडीया सोय ॥ ७ ॥ निजदृष्टें शनिश्वर पांगलो, पीता सारथी तुमें सांभलो ॥ राजा विक्रम बोले इस्युं, ए रांक बापडे चाले किश्युं ॥ ८ ॥ इण अवसर शनीश्वरछे यच्छ, अवधि ज्ञाने जोवे तच्छ ॥ जोतां मुज विक्रम अवगणे, वेगें आवी रायने भणे ॥ ९ ॥ रूप भयंकर होइ विकराल, लोह मुद्गर कर

मूकि माल ॥ कोपें चड्यो निलंबरदेव, विक्रमसुं आवी पभणेव ॥ १० ॥ सांभल राजा माहारुं काम, हुं. रूठ्यो टालुं तुज ठाम ॥ बीनो विक्रम बोले वाण, खमजो जे बोल्युं अजाण ॥ ११ ॥ पूजी प्रणमी शनीश्वर पाय, संतोष्यो निज थानक जाय ॥ पण शंका मनमांहे पैठ, के टले कालें शनीश्वर बैठ ॥ १२ ॥ निशदिन बीहीतो जहने नाम. ते लागो मुज शनीश्वर स्वाम ॥ तेडी मंत्रीने आपुं राज, हुं जाउं परदेशें आज ॥ १३ ॥ सोंपी राज गयो परदेश. चंपा नयरी कर्यो प्रवेश ॥ श्रीपतिने हाटें जइ बैठ, तव तस नयणे अमीय पइठ ॥ १४ ॥ शेठ हाटेंछे वस्तु अनेक, थोडी वेलामां वेंची छेक ॥ भाग्यवंत नर जाण्यो जाम, जिमवाने घरे लाव्यो ताम ॥ १५ ॥ भोजन भक्ति भली सांचवे, सुख शय्यायें सूवा पाठवे ॥ पासें भींत सछोहित ठाम, सारस हंसनें मोर चित्राम ॥ १६ ॥ दंत धावन करे तिहां राय, श्रीपतिने मन उलट थाय ॥ मर्द्दनीयां तेडाव्या गेल, सहस्र पाक आणाव्यो तेल ॥ १७ ॥ उष्ण सुगंधी अणाव्युं नीर, तेणे नवराव्युं राय शरीर ॥ दीये खीरोदक लूवा अंग, निज तनुं लूहे राय निरंग ॥ १८ ॥ जोवे राजा कौतुक भरी, नाही तव श्रीपति कुंअरी ॥ हार वोडले मूक्यो जाम, इण अवसर शनी जोवे ताम ॥ १९ ॥ मुज उवेखी विक्रम राय, चंपा नगरी बेठो ठाय ॥ सुख शय्यायें बेठो सुख भरी, तो पराक्रम देखाडुं फिरी ॥ २० ॥ शनी संक्रम्यो हंस मझार, चुणी हारने बेठो ठार ॥ ते देखीने बीनो राय, कलंक भणी ते नाठो जाय ॥ २१ ॥ श्रीपति बेठो जिमवा काज, बेटी हुइ रमवाने साज ॥ अवसर देखी विक्रम राय, चरण चलावी चंचल जाय ॥ २२ ॥ पुत्री नाही करे शिणगार, नवी देखे एकावल हार ॥ श्रीपति जोवे घणु खर करी, राय जाण्यो तव झाल्यो फिरी ॥ २३ ॥ करवाली पुठे बांधीओ, चोर अवस्था तिणीपरे कियो ॥ राय जने श्रीपति पूछीओ, एहिज तस्कर तेणे कही दीधो ॥ २४ ॥ चोर भणी तेणे छेद्या हाथ, चौटे पडिया तव

नर नाथ ॥ तेली एकें दीठो जिसें, तली हाथने आएयो तिसें ॥ २६ ॥ काष्ट तणा तव कर जोडने, वली बेठो घाणी फेरवे ॥ खाये खोलने तेल रोटला, राग करे छत्रीशे जला ॥ २५ ॥ दुःख विसरयुं निज घर तणु, शरले सादें गावे घणु ॥ नरपति पुत्री मंदिर पास, सुणी साद जोवा हुइ आश ॥ २७ ॥ तव तिहांथी दासीने कहे, घांची घरजे पुरुषज रहे ॥ वेगें तेहने तेडी लाव, घांची घर सा जाये धाव ॥ २८ ॥ मनोरमा नर बोलावियो, राय बेटी तुम आदर दीयो ॥ तुमने वेग ते ज्याछे घेर, दूती विक्रमशुं उच्चरे ॥ २९ ॥ घांची कहे तेडी जाओ तुमे, तुम वचने मूकूंछुं अमे ॥ पाछो मोकलजो इणे ठाम, तिहां लगें करशुं एहनुं काम ॥ ३० ॥ तेह पुरुष लावी सा पास, तव उतरियो शनीसर तास ॥ अद्भूत रूप देखी अतिजलुं, वचन कहे तव वरवा तणुं ॥ ॥ ३१ ॥ कहे विक्रम कर माहारे नथी, नवी परणाए अमे तेहथी ॥ चंडि मंत्र कुमरियें साधियो, सोवनू मागीने कर लीयो ॥ ३२ ॥ मुजने ए वर आपो हरख, एहने दोय कर आवे तुरत ॥ हुओ दिव्यानुजावें वाच, नवपल्लव कर आव्या साच ॥ ३३ ॥ छानो परएयो विक्रम राय, केटले कालें जाएयो माय ॥ प्रगट परणावी तव पुत्रिका, श्रीपति मीटें पड्या त्यां थका ॥ ३४ ॥ नर पतिना तिहां प्रणमी पाय, श्रीपति त्रिजघरें लइ जाय ॥ अशन पान करी राजा सूए, शेठ सहित नृप विक्रम जूए ॥ ३५ ॥ बोल्या वरशज साढा सात, अवलोके शनी नृपनी वात ॥ आवी हंस मध्ये संक्रमी, हार चोडजे मूक्यो वमी ॥ ३६ ॥ तत्क्षण शनीश्वर प्रगटज थाय, वर मागो तुमे विक्रम राय ॥ घणु संताप्यो में तुम तणे, हसी शनीसर मुख इह जणे ॥ ॥ ३७ ॥ रविसुत करे राय प्रशंस, धन्य धन्यतुं साहसीक अवतंस ॥ जो तुं तूठो मुजने सही, तुज मुज वात कही ते रही ॥ ३८ ॥ डादशमो थावर वांकडो, राजा रांक कीधो बापडो ॥ अढी संवत्सर वस्तक रहे, अढी वाजी ज्योतषिया कहे ॥ ३९ ॥ अढी संवत्सर अणे

वास, दूओो शनीसर त्रीजो तास ॥ एह शनीसर शाढा सात, इणी परें शनिनो कह्यो अवदात ॥ ४० ॥ जेहने होय शनी बारमो, जन्म द्वितीय चोथो आठमो ॥ एह कथा सांभलसे जेह, निजरासी फल पामे तेह ॥ ४१ ॥ तेहने तुमे पीडो नही कदा, ए वर आपो शनीसर तदा ॥ वर देइ शनी थानक वह्यो, हरख्यो राय उजेणी गयो ॥ ४२ ॥ चाल्यो चतुरंगी सेना करी, आव्यो जिहां उजेणी पूरी ॥ निज भुवने विक्रम आवियो. हरखी लोके वधावोदीयो ॥ ४३ ॥ सिद्धसेन गुरु वचने करी, लह्यो धर्म समकित आदरी ॥ महाकाल तीरथ उद्धरी, परदुःख टालण दानेशरी ॥ ४४ ॥ सुखें समाधें पाले राज, करे उपकार मर सारे काज ॥ निरयावली उपागें कह्यो, एकावतारी शनीसर कह्यो ॥ ४५ ॥ एह कथाछे शनीसर तणी, पीडा नकरे चोपाइ सुणी ॥ सुख संपति ते सघली लहे, पंडित ललित सागर इम कहे ॥ ४६ ॥ इति

॥ अथ शनीश्वरनो छंद प्रारंभः ॥

(॥ दुहा ॥) छायानंदन जग जयो, रवि सुत शामक वान ॥ कोडी कवित्त करी हुं स्तवुं, तुज गुण केता मान ॥ १ ॥ हिवे तुं मुज मया करी, दोलत देजे देव ॥ पांडव प्रभु जिम तें करया, मंत्र भणी तत सेव ॥ २ ॥ बीजो बलियो तुज थकी, कवण कहुं कलिजुग ॥ अरडक मल्ल मुछाल जे, जे तुज नमे प्रत्यक्ष ॥ ३ ॥

[॥छंद॥] तुजने प्रत्यक्ष नमें मुछाला, जेहनें साथ सबल दल पाला ॥ तुजसम अवर हठी कुण कहियें, नवखंडे तुज नामज लहियें ॥ ४ ॥ ग्रहगण व्यंतर तारा चंद, समरे देवह दाणव इंद ॥ समरे सबला राया राण, जक्ष राक्ष किन्नर उरजाण ॥ ५ ॥ कोइ नही कलियुग तुज तोले, तुज गुण मोटा महिपाति बोले ॥ जो रूठो जाणे जिम काल, करे पृथ्वी उथल पाताल ॥ ६ ॥ बेठो राशे तव थाये चंड, गिरिवर मंडें खंडो खंड ॥ जो विकरच्यो जाणे यम दंड, तूठो द्ये पंचामृत मंड ॥ ७ ॥ जे तुज नाम लेपंतो जा

ा, वयरी दल प्रगट पाये भागे ॥ विक्रम वीर मान तुं मोडे ॥ जोगी जंगम ते करजोडे ॥ ८ ॥ तुं बाले झालेने पछाडे, भरे सारे भे संहारे ॥ तुज पडघा थरहर कंपावे, भगति विना कहो कुण रिद्धि पावे ॥ ९ ॥ क्रूर दृष्टि जिहां तुं भाळे, तापे जोबणमुं प रजाले ॥ भूत प्रेत खेचर चामुंड, कोप्यो देवे ते शिर दंड ॥ ॥ १० ॥ कालो काल महाविकरालं, कानें साप हाथे करवालं ॥ हुंहुंकार करंतो हिंडे, बलियो एतो तिहुअण मंडे ॥ ११ ॥ तुज आसनथी पडे पुकार, दूरगयो तव जय जय कार ॥ मोति माणकने भंडार, तुं मोटा घे गज असवार ॥ १२ ॥ लटक लटक दोय पग लंघावे, मई शनिश्चर नाम कहावे ॥ जलथल गिरिवर गुहिर वनसाथें, तुं समरथ ताहिब जग हाथे ॥ १३ ॥ नवल नारि न वल भरतारं, क्रूरोडादिक जश नाम उदारं ॥ कांने कुंडल कंठे हारं, जीव्हा जेहवी यम तरवारं ॥ १४ ॥ तुज गुण गंगा रंग तरंगं, श्यामवर्ण सोहे तुज अंगं ॥ धरुं ध्यान थइ एक रंगं, पूर मनोरथ मुज उत्तंगं ॥ १५ ॥

॥ कलश छपय ॥

मंत्र धरुं ॐकार, शनिश्चर राय सुजानह ॐ ह्रीं क्रों अक्षर सारह, मंत्र जपीयें निरधारह ॥ एणे मंत्रें उलटधरी, वीनतडी चित्त आणीये ॥ ऋद्धि वृद्धि सहेजें सदा, वली वली शनी वखाणीये ॥ १६ ॥

॥ अथ कर्म ऊपर छंद लिख्यते ॥

॥ चोपाइनी देशी ॥ आदि जिनेश्वर करूं प्रणाम, समरुं सरस्वति सामिणी नाम ॥ कर्म तणी गति विषमी कहुं, कर्म तणा फल शुणजो सहु ॥ १ ॥ कर्में आदीसर भगवन्न, वर्ष दिवस नव प्राम्या अन्न ॥ भरत बाहुबल झगडो करचो, कर्में मल्लिनाथ स्त्री

वेद घरयो ॥ २ ॥ आदिसर साधना यती, मूकी वेश हुआ मही पती ॥ खंधक सूरि शिष्य पांचसें, घाणी घाल्या शिवपुर वसें ॥ ॥ ३ ॥ शिष्य सहुमुक्ति पाम्या सही, आप भुवन पति पदवी लही॥कर्मे चंद्र कलंकी थयो,कर्मे श्रेणिक नरकें गयो॥४॥कर्मे ब्रह्मा करयो कुंभार, कर्मे विष्णु दश अवतार ॥ कर्मे इश्वर दीधी शीख, कर्मे मूंज मंगावी भीक ॥ ५ ॥ कर्मे इंद्र अहिल्यासुं रम्यो, कर्मे रामचंद्र वन भम्यो ॥ कर्मे पांडव गया विदेश, कर्मे नल भमिया बहु देश ॥ ६ ॥ दमयंतीने पड्यो वियोग, कुबेरदत्त माय बेहेन संयोग, ॥ खंधक कुमार उतारी खाल, सती सुभद्रा चढियुं आल ॥ ॥ ७ ॥ वंकचूलराय घरे अवतार, चोर थइ रह्यो पाले मकार ॥ बलया सुंदरि महा बल धणी, पूर्व कर्म करयांरे वणी ॥ ८ ॥ वंश अग्रे एलाची पूत्र, कर्मे पाम्यो ग्यान पवित्र ॥ कर्मवसें श्री आद्र कुमार, मूकी वेष मांड्यो व्यापार ॥ ९ ॥ गजसुकमार शिर बांधी पाल, भरी अंगार करयुं परजाल ॥ कर्मे ॥ नवनंद करपी हुआ, मूमन धन मेलीनें मुआ ॥ १० ॥ युगल गयुं कर्मे नारकी, शुली सुदर्शन करमे थकी ॥ मुनि आषाढे कीधुं एम, गुरु छंडी वेश्यासुं प्रेम ॥ ११ ॥ नंदिखेण जुओ मुनि राय, मूकी वेश वेश्या घर जाय ॥ सूरिज गति भमे निशदिश, कर्म तणीछे ऐसी जगीश ॥ १२ ॥ सकोमळ वाघणी मूख पड्या, मेतारज शोनारि नड्यो ॥ रह्यो कोश्या घर थुलिभद्र यती. कर्मे पाप न लाग्युं रती ॥ १३ ॥ खोड बळंतो पन्नग जेह, धरणेंद्र पदवी पाम्यो तेह ॥ मुनि सुव्रत वाणी अनुसरी, वाजी पोहोंतो देवन पुरी ॥ १४ ॥ पुरव कर्मे श्री महावीर, श्रवणे खोला चरणे खीर ॥ नामे हरि बल माछी वली, कर्मे स्त्री पाम्यो निरमली ॥ १५ ॥ अरणिक मुनि दीक्षाथी पड्यो, चंडकोशियो सुर पदवी चड्यो ॥ शास्त्र निमित्तिआ कै कै कह्या, मूकि वेश घर वासी रह्या ॥ १६ ॥ मु-

मास खमणना धणी, ते गति पाम्या पन्नग तणी ॥ कूरगडूने ज[illegible]तां नाण. एह कर्म तणु अहि नाण ॥ १७ ॥ कर्मे उत्तम कुलनी नार, तेह वांछे बीजो भरतार ॥ कठियारो इम शीले रह्यो, द्रव्य छंडीने नाशी गयो ॥ १८ ॥ कर्म थकी भरते शुं कीध, आरिसामां केवल लीध ॥ वली तंदुल मच्छ कर्मे करी, सातमे नरके पोहोचेवली ॥ १९ ॥ कुंडरिक पुंडरिक बंधव बे, एक राजा एक दीक्षाले ॥ पडियो मुनिवर चाडियो राय, जराकुमरे मार्यो निज भाय ॥ २० ॥ कर्मे दर्दुर सुरवर थाय, कर्मे रालिया रंकने राय ॥ कर्मे हाथी नर अवतार, प्रत्यक्ष पेखो मेघ कुमार ॥ २१ ॥ बाल पणे श्री वयर कुमार, पालणे भणिया अंग इग्यार ॥ लक्षमणा नामें जेमहा सती, कर्मे ते चूकी शुभगती ॥ २२ ॥ मयणसुंदरी नरपात सुता, वरियो कोढी सहु देखतां ॥ कर्मे चूलणी मारे पूत्र, कर्मे भांजि रहे घरसूत्र ॥ २३ ॥ हरिकेशी बल पूरव यती, कुल चंडाल तणे उतपती ॥ कर्मतणी गति जुओ ईशी, सारे देव सेवा उल्लसी ॥ २४ ॥ सती सीता संकटमां पडी, इच्छाकारी बहुकर्मे नडी ॥ एक रडवडतां सघले भमे, तेहने कन्या न मिले किमे ॥ २५ ॥ कर्मतणाफल जोजो देव, बहोत्तर सहस परण्या वसुदेव ॥ कर्मे केसरी केवल लियो, कर्मे भामंडल जीवियो ॥ २६ ॥ करमें भगिनी करवा द्रोह, कर्मे सुली थयां सुरलोय ॥ कर्मे चोरी रोहीण करे, कर्मे पुन्यवंत भूखे मरे ॥ २७ ॥ कर्मे विक्रमने शिर आल, लहे केवल एवंतो बाल ॥ घणी वेढ लगे नव नारद, कर्मे शुद्ध बुद्ध पाम्या बलद ॥ २८ ॥ चौद पूरवधारी जे मुनीस, पड्या निगोद्र वही निशदीश ॥ सुभूम राजा नरके गमण, ब्रह्मदत्तनें गमियानयण ॥ २९ ॥ द्रढ प्रहारे करि हत्याचार, तोहि मुक्ति फल लीधां सार ॥ गौतम स्वामी गणधर जोध, देवशर्मा ब्राह्मण प्रतिबोध ॥ ३० ॥ कर्मतणी गती किमें कहेवाय, निज प्रेमदा शिर कीडो थाय ॥ कर्मे अर्जुनमालीअणगार, पातिक उ

तारयां निरधार ॥ ३१ ॥ हरिचंद राजा साहसधीर, कर्मे डूब रे वसुंनीर ॥ परसुराम जमदग्निनी जात, क्षत्रीना तेणे कीधा घात ॥ ३२ ॥ प्रजवो हुंतो मोहोटो चोर, तिणे लीधुं संजमव्रत घोर ॥ जद्रबाहु स्वामी गुरु जाय, वरामिहर नामे कहेवाय ॥ ३३ ॥ मूकी दीक्षा जार्षे जोष, इणिपरे करे उदरनो पोश ॥ सनतकुमार करतो रंगरोल, डीले रोग उपना छे शोल ॥ ३४ ॥ दशशिश रावण कीध कल्लोल, कर्मे दशशिर हुआ रोल ॥ कर्मे निर्धननें ध नवंत, कर्मे थाय संत असंत ॥ ३५ ॥ चंपकसेन दाशीनो पुत्र, लीधुं व्रत दत्तघरसूत्र ॥ कर्मे पुत्र केवलसिरी लहे, पामी केवल घरमां रहे ॥ ३६ ॥ कीधां कर्म न आवे पार, देखो द्रौपदी पंचज्ञ-रतार ॥ शास्त्र मांहि छे घणा विचार, ते कहेतां नव आवे पार ॥ ३७ ॥ सुलसा श्राविका कर्मे ओधान, सुतबत्रीशें धरया प्रधा न ॥ एक धरमीने थाये ज्यांन, एक पापी पामे बहुमान ॥ ३८ ॥ तेदेखी मन धरज्यो रोष, पूरव कर्म तणो ए दोष ॥ निंदा नक रो को केहतणी, निंद्या थाये दुरगतिनो धणी ॥ ३९ ॥ जेहने होय निंद्यानो ढाल, ते बोल्यो चोथो चंडाल ॥ परतणीजे निंदा करे, पिंडपोतानो पापें जरे ॥ ४० ॥ तेहनें साधु कहे जगबाप, जे केहने नकरे संताप ॥ कविकहे तस लागुंपाय, जिम मुज दुःख ते संघला जाय ॥ ४१ ॥ जेहने जेहवी होये मति ॥ तेहनें ते· हवी थाये गती ॥ ते देखी मम धरज्यो रोष, पूरव कर्म तणो ए दोष ॥ ४२ ॥ जो करो निंद्यानी खांत, निंदा आप करो दिनरा त ॥ निज आतमने दियो उपदेश, ते जन करशे मुगति प्रवेश ॥ ४३ ॥ तपगच्छ नायक जगगुरु नाम, श्री हीरविजय सूरि अ जिराम ॥ पटधर श्री विजयसेन सूरीस, रतन सागर प्रणमे निशदीश ॥४४॥

कलश [॥ हरिगीत छंद ॥] इम आदिनीरे अंतधीरे, करयां कर्म सहु जोगवे ॥ श्रीचक्रवर्ति पद वसुदेव राजा, शुज अशुज फल जोग

मुण जीवडा एक पुण्य करतां, दुःकृत सघला खेपियें ॥ ारी पामे सारी, जिनवरवाणी जे पिये ॥ ४१ ॥ इति ॥

अथ श्री यंत्र महिमा वर्णन छंद लिख्यते॥

[॥ चोपाई ॥] जिणचोवीशे पय प्रणमेवि, सह गुरु तणा वचन निशु णेवी ॥ यंत्र तणो महिमा अति घणो, जावे बोलुं जवियण सुणो ॥ १ ॥ शोले कोठे लिखियें वीश, सघला जय टाले जगदीश ॥ अठावीशमां रोग जय हरे, छत्रीशें युति जय करे ॥ २ ॥ त्रीशें वलि सायणी नासंति, बत्रीसें सुख प्रसवते हुति ॥ देवध्वजा जो लिखियें इमें, परचक्र जय न होवे किमें ॥ ३ ॥ घर बारणे जो लिखियें एह, कामण नव पराजवे तेह ॥ शाकणी संहारी न हुवे तिहां, चोत्रीसो यंत्र लिखिये जिहां ॥ ४ ॥ चालिसें शीस रोग टले, पागे बयरी हेला दले ॥ अने वली ठाकरडे बहु मान, वसुधा वलि वधारे वान ॥ ५ ॥ बासठें वंध्या गर्जज घरे, एसा वयण सदगुरु उच्चरे ॥ चोसठनो महिमां छे घणो, मार्गे जय न होय कोइ तणो ॥ ६ ॥ वारि जय रिपु ज्ञाकाणे तणां, चोसठना महिमा नाहिं मणां ॥ बावत्तरी जूत पूरिं जेह, फूंजे नर जय पामे तेह ॥ ७ ॥ पंच्चाशी पंथें जय हरे, अठ्योतरसो शिव सुख करे ॥ वीसोत्तरशो नयणे निरखंत, प्रसव वेदन ते नवि हुंत ॥ ८ ॥ बावनशोनो उली नीर, मुख धोवे हुवे वाहालो वीर ॥ सतारिसयनो महिमा अनंत, तुच्छ बुद्धि किम जाणे अंत ॥ ९ ॥ एकसो बहुत्तरो यंत्र प्रजाव, बालकने टाले दुष्ट जाव ॥ बिहुंसोनो यंत्र लिखियें बार, वाणिज्य घणां होय हाट मझार ॥ १० ॥ त्रणशें नरनारीनो नेह, विणश्यो वाधे नही संदेह ॥ चारशें घर जय नवि होय, कण उत्पात्ति घणी खेत्रें जोय ॥ ११ ॥ पांचसें महिला गर्जज धरे, पुरुषहने पुत्र संतति करे ॥ छसें यंत्र होये सुखकार, सातसें झगडे होये जय का

र ॥ १२ ॥ नवमें पंथे न लागे चोर, दशमें दुःखन परा
र ॥ इग्यारसें छे जे जीव दुष्ट, तेहना जय टालें उत्कृ
॥ १३ ॥ बंदि मोक्ष बारसें होय, दश सहसें पुनः तेहिज
॥ वली सयलनी रक्षा करे, इमयंत्र तणी महिमा विस्तरे ॥ १४ ॥
पञ्चासमें राजादिक मान, शाकणि दोष निवारण न्यान ॥ कंठे त
था मस्तक जे धरे, अशुज कर्म ते शुद्धज करे ॥ १५ ॥ बाव
ननानो मस्तके तथा, कंठें खेत्रपालनो हित सदा ॥ पणयालीस
शिर कंठ होय, सर्व वश्य थाय तस जोय ॥ १६ ॥ कुंकुम गो
रोचंदन सार, मृगमदसों चौदश रवि वार ॥ पवित्र पणें पुष्य मू
ल नक्षत्र, एकमनां जो लिखियें यंत्र ॥ १७ ॥ पार्श्व जिनेश्वर
तणे पसाय, अलिय विघन सब दूर पलाय ॥ पंडित अमर सुंदर
इम कहे, पूजे परमारथ सब लहे ॥ १८ ॥

॥ श्लोक ॥ समीहितार्थं विधु १ हीनमालिखेत्, स्तने २ ग्रहे
९ षोडश १६ सप्तमा ७ ष्टमे ८ ॥ तिथौ दशांशे १० प्रथमे
घ १ कोष्ठे, द्वि २ सप्त ७ षट् ६ त्र्य ३ ष्ट ८ ज्ञु १
वेद ४ मार्गणाः ५ ॥ १ ॥ इति यंत्रकोष्टकमिदम् ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ छंद प्रारंजः ॥

(॥ पधडी छंद ॥) सरसति सार सदा बुधजागी, समरंतां दुःख दूरमति जागी ॥ श्रीशंखेश्वर पार्श्व प्रतापी, धरणिधर जस महिमा थापी ॥ १ ॥ ऋषजादिथी पहेली चोवीसी, दामोदरजे नवमे जगीसी ॥ आषाढ श्रावक वंदे जावें, दामोदर जिन जक्ति उपावें ॥ २ ॥ जिन कह्यो पास जिनेशर वारें, गणधर मुक्ति पयोदीत द्वारे ॥ जावी जिन पार्श्वमूरति प्रेमे, निजवर पूजे अलंकृत नेमें ॥ ३ ॥ पेहलें कल्पें उपनो आषाढ, सुरवर पार्श्व पूजे जिन दाढ ॥ श्रीऋषजदेव तणा पर पोत्रा, नेमी विनेमी विद्याधर गोत्रा ॥ ४ ॥ वैताढ्य सैलें पार्श्वजी थाप्या, पूजी प्रणमीनें शिव सुख व्याप्या ॥ इंद्रादिक सुर नर तिहां

ने, चंद्र प्रजुवारे इंद्र प्रयुंजे ॥ ५ ॥ चंद्रसूर्य तिहां जिनना मुखथी, ास जिन वारे छुटशो दुःखथी ॥ अजरामर पद दायक जाणी, गुरु जावना जावे मन आणी ॥ ६ ॥ कंचन बलाणें जाइ जेच्या, जन्मादिक त्रिक तुमथी मेल्या ॥ इमघणा इंद्र ओलंग करंता, नागेंद्रादिक जक्ति उचरंता ॥ ७ ॥ पद्मावती वर शासन रागी, मुक्ति लीला लहे ललना लागी ॥ आगामिक जस उदयो सामी, यदु कुल वंछना पोहोती कामी ॥ ८ ॥ प्रतिहरि जरा सिंधु कहावें, बालपणा माटे बीहावे ॥ कृष्ण नेमने बलजद्र जाइ, हेमवर्ण दुवारकां नीपाई ॥ ९ ॥ ऋद्धि सबल परिवार पनोता, कंश विडारण पगलां जोता ॥ यदुपति जरासंधसुं अ डियो, जरपूरे पंचासरे जडियो ॥ १० ॥ जरासंधें तिहां शस्त्रज मो ज्यो, नवि रहे कोइनो राख्यो न ओज्यो ॥ गडीत श्वलीत जडीत ज डजाली, हरिबल जिनजी जूइ संजाली ॥ ११ ॥ धरणेंद्र पूजे पास जिन जावी, नमण जले दियो जरा उठावी ॥ अठम तपथी आपे पास, सु ख संपतिनोछे आवास ॥ १२ ॥ पूजी प्रणमीनें नमण जणावी, जय वर शंखो शुद्ध सुणावी ॥ जरा नाठी जरासंधसेना त्राठी, चक्रधा· री हरिबल जुजा काठी ॥ १३ ॥ छत्रकुल कोडीशुं यादव, पूजे प्रजुनें ओधन माधव ॥ श्रीशंखेश्वर शंखपुर थापी, लोटी दैत्यनें शिक्षा आ पी ॥ १४ ॥ जावि जिनेसर पासजिन वारे, तीर्थ घणां थापी निस्तारे ॥ उद्धार एह ठामे अधिकेरा, विक्रम जोगकृत जलेरा ॥ १५ ॥ उ दयसूरीस्वरनें अधिकारे, देव अधिष्टित पद आधारे ॥ वंछित लेवा सुरपति सूरा, जक्ति करे नव रस सनूरा ॥ १६ ॥ इग्यारसें पंचावन वर्षे, दुरिजन सज्जन साथे हर्षे ॥ ठकुर शुर्यपुर नामी, सज्जनसेठ वडो धनधामी ॥ १७ ॥ देव विमान सो मंदिर कीधो, लक्ष्मी तणां बहु लाहो लीधो ॥ आजलगें शंखेश्वर वासी. घणा सुखी साधुजन उपासी ॥ १८ ॥ तुं चिंतामणि काम कुंज वारु, वढियार देशमां व· स्यो दिदारू ॥ कल्प वृक्षने कामज धेनु, तुज सेवाथी कांइ नहि उ-

णु ॥ १९ ॥ वाट घाटमां रक्षा तारी, नील वर्ण आशा पूरजो महारी ॥ धरणेंद्र पद्मे जसु जय कारी, नवनिद्धि रिद्धि सदा दगतारी ॥ २० ॥ धरशुद्ध पूजा चाहिजो कीजें, मनवंछित फल सहेल लहीजें ॥ डोसले अजुनुं नाम प्रसिद्धो, बहुरूपी शंखेश्वर कीधो ॥ २१ ॥ अहर्निश रहेजो हृदयज मांहि. एहिज मागुं अवर नकांहि ॥ अंतर टालोतो आवुं हजूरे, जवजव मिलजो एह पुन्यपूरे ॥ २२ ॥ तप गच्छ नायक ज्ञाव जलेरा, श्रीदानरत्न सूरिश्वर मेरा ॥ शांतिसुधारस सुजस गाजे, विबुध हंसरत्न विराजें ॥ २३ ॥ श्रीशंखेश्वर तुमहिज सरणं, कनक सदा मन आनंद करणं ॥ त्रिजुवन त्राता तुमथीं तरणं, शीघ्र महासिद्धि सदा जय करणं ॥ २४ ॥ संवत शशि नाग महिभृग आशा, रवि शुद्ध पंचमी पोशह मासा ॥ पधडीछंद पूर्ण वर्ण कीधा, सांजलतां सब शिव सुख लीधो ॥ २५ ॥

॥ अथ ज्वर (ताव) को छंद लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ ॐ नमो आनंद पुरनगर, अजयपाल राजान ॥ माता अजया जनमियो, ज्वरतुं कृपा निधान ॥ १ ॥ मातरूप शक्ति हुओ, करवा खेल जगत्त ॥ नाम धरावे जूजूवा, पसर्यो तुं इत्त उत्त ॥ २ ॥ एकांतरो बेयां तेरो, त्रइयो चोथो ताम, शीत उष्ण विषम ज्वरो, ए साते तुज नाम ॥ ३ ॥

(॥ छंद ॥) ए साते तुज नाम सुरंगा, जपता पूरे कोडि उमंगा ॥ तें बाम्या जे जालिम जूंगा. जगमां व्यापी तुज जस गंगा ॥ ४ ॥ तुज आगें जूपति सब रंका, त्रिजुवनमां वाजे तुज डंका ॥ माने नहिं तुं केहनी शंका, तूठो आपे सोवन टंका ॥ ५ ॥ साधक सिद्धतणा मद मोडे, असुर सुरा तुज आगल दोडे ॥ दुठ पीठनां कंधर तोडे, नमीचाले तेहनें तुं छोडे ॥ ६ ॥ आवंतो थरहर कंपावे, डाह्याने निमतिम बहकावे ॥ पहिलो तुं केडमांथी आवे, सात शिरखापिण शीत नजावे ॥ ७ ॥ हीं हीं हुं हुंकार करावे, पांशालिया हाडं कडडावें ॥

ाले पिण अमल अगावे, तापें पहिरणमां मूतरावे ॥ ८ ॥ आशो का कमां तुज जोरो, हव्यो न माने धागो दोरो ॥ देश विदेश पडावे शोरो, करे सबल तुं तातो तोरो ॥ ९ ॥ तुं हाथीनां हाडां ञंजे, पापीने ताडे करपंजे, ञक्ति वत्सल ञावें जो रंजे,. तो शेवकने कोय न गंजे ॥ १० ॥ फोडक तोडक डमरु डाकं, सुरपति सरिखा माने हाकं ॥ धमके धुंसड धांसड धाकं, चढतो चाले चंचल चाकं ॥ ११ ॥ पिशुन पछाडण नहीको तोथी, तुज जस बोल्या जाय न ·ोथी ॥ शी अणलील करो ए थोथी, मेहर करी अलगा रहो मोथी ॥ १२ ॥ ञक्त थकी एवडी कां खेडो, अवल आमिनां छांटां रेडो ॥ लाखा ञक्तनो ए निवेडो, म हाराज मूको मुज केडो ॥ १३ ॥ लाजवसोमां अजया राणी, गुरुआण सानो गुण खाणी ॥ घरें सिधावो करुणा आणी, कहुंछुं नाकें लेंटी ताणी ॥ १४ ॥ मंत्र सहित ए छंदजे पढशे, तेहनें ताव कदी मन चढशे ॥ कांतिकला देही नीरोगं, लेहेशे लखमी लीला ञोगं ॥ १५ ॥

॥ कलश छप्पय ॥ ॐ नमो धरि आदि, बीज गुरु नाम वदीजें ॥ आनंदपुर अवनीश, अजयपाल आखीजें ॥ अजया जात अढार, थां पिये साते बेटा ॥ जपतां एहिज जाप, ञक्तशुं न करे मेटा ॥ उतरें अंग पाढियोपलमे, तारा वयणे मुदा ॥ कहे कांति रोग नावे कदि, सार मंत्र गणियें सदा ॥ १६ ॥ इति ज्वरछंद समाप्त ॥ ए छंद सात वार, अथवा चौदवार अथवा एकवीश वार सांञले गुणेतो ताप जातो रहे॥

॥ अथ पद्मावती मातानो छंद लि ·यते ॥

॥ दुहा ॥ दानव मुंचित सवन घन, चलितासन अहिराज ॥ फ· नन थगम पद्मावती, नचत नाच शिवकाज ॥ १ ॥

॥ छंद चाल ॥ पाय ठमकाति ठणण, घूघर- घणण, झणण नेउर झणकंती ॥ चूडी अति खणण, घूघरि झणण, फणण, फूदडी फरकंती ॥ वीणा रव झणण, कांशिय कणण, तणण तंतिय ताणञरे ॥ पउमा अमरिय, जिनगुण समरिय, रंगञर राचिय नाच करे ॥ १ ॥ वाजत्र

समताल न, दुंदिही चालन, भालन फेरि भणकंती ॥ दुक्कड दड डनन शंख शोभानन, कणण कांशिय कणणंती ॥ कल अकल कारी, अति मनोहारी, वाणी श्रवणा सुखकरें ॥ पउमावे० ॥ २ ॥ माणक पथकाडियां, मोतिसुं जडियां, आडि अंगे ओपंत्ती ॥ लायक जग नायक, मनमथ घायक, पाये अखियां रोपंती ॥ बाहडी लोडावति, जिन गुण गावति, भावति भानी चित्त खरें ॥ पउमावे० ॥ ३ ॥ बाजे डफ वीणा, रसभर लीणा, झीणानादें झणणंती ॥ आवे अलवंत्ती, देवीसुं पंत्ती, देहमृकंती दीपंती ॥ चूंदडी नवरंगी, आंगिया चंगी, नवल सुरंगी रंगभरे ॥ पउमावे० ॥ ४ ॥ तुं दैत्य संहारी, विघ्न विहारी, समकित धारी जयकारी ॥ शासन सुरि सारी, सगभय वारी, अहि पति प्यारी मनोहारी ॥ सागर हरि, अरि किरी, जलन जलोदर, नामजप्यां दुख दूर करे ॥ पउमावे० ॥ ५ ॥ पारश परमेश्वर, भुवन दिणेसर, अलवेसर पद सेवंती ॥ क्षमा जिन उत्तम, पद्मविजय सुभ रूपविजयपद देवंती ॥ शंखेश्वर इसर, त्रिभुवन दिनेसर, सेवाकारी भक्तिभरे ॥ पउमावे० ॥६॥ इति ॥

॥ अथ भीड भंजन पार्श्वनाथ छंद लिख्यते. ॥

[॥ तुटक छंदनी चाल ॥] भीडभंजन भवभय भीतिहरं, जयो पार्श्व प्रभुजिन प्रीतिकरं ॥ सेवक मन वंछित सिद्धि पदं, प्रभु दर्शन कोटी गमे फलदं ॥ १ ॥ जे आण अखंडित आप वहे, ललना लखमीते लीललहे ॥ दुःख दूरगती तेहथी दूरे रहे, कुण अपरंपर नो पार कहे ॥ २ ॥ करकमलजोडी प्रणाम करे, धूप चंदन आरति दीप धरे ॥ वली कुसुम तणाजे पगर भर, नर केवल कमला तेह वरे ॥ ३ ॥ कुंकम मृगमद घनसार वरं, अक्षत जल फल नैवेद्य धरं ॥ मधुरध्वनी मंगल पाठ रवं, सेवा शिवपद आपे विभवं ॥ ४ ॥ कविताजे प्रभू गुण रंग कवे, तसु जय लच्छी वरमाल ठवे ॥ भवि नृत्यकरें नवनव छंदे, वृंदाकर तेहना पदवंदे ॥ ५ ॥

इन परदल दलनं, प्रभु पूजन मुक्तिवधु मिलनं ॥ महा मंगल कलानिलयं, कली किसल लता किसलय कलियं ॥ ६ ॥
अद्भुत संपज सौव सदा, प्रभु पार्श्व नमो वामेय मुदा ॥ भवंत भजे नही कष्ट कदा, होय आदि दुष्ट उच्छेद तदा ॥ ॥ ७ ॥ खेटकपुर मंडन देव खरो, त्रिविधे सेवि संसार तरो ॥ प्रभुपूजी पुन्य भंडार भरो अवसर पामीने सफल करो ॥ ८ ॥ ॐ कार भजो अहंकार तजो, माया बीज जिनराज भजो ॥ अर्हं भीड भंजन पार्श्व प्रभु, नमतां आपे नवनिद्धि विभु ॥ ९ ॥ एम वाचक उदयरतनवदे, धरो पार्श्व प्रभुनुं ध्यान हृदे ॥ सघली इच्छा जेम सफल फले, टले दुर्जन सज्जन संगमिले ॥ १० ॥
(॥ कलश ॥) सर्वसिद्धि सदनं शिवसाधनं, पार्श्व देव पदयो आराधनं॥ धृति मति कीर्ति कांति विवर्धनं, मदन मोह महा रिपु मर्दनं ॥ ११ ॥

॥ अथ शंखेश्वर पार्श्वनाथनो छंद लिख्यते ॥

(॥ दुहा ॥) श्रीजिन त्रिभुवन मंडणो, स्वामि लीलाविलास ॥ जागे जग महिमा निलो, जयो शंखेश्वर पास ॥ १ ॥ सेव्यो सुख संपति करे, पूज्यो पूरे आश ॥ अश्वसेन कुल उद्धरण, साध्यो शिवपुर वास ॥ २ ॥ वासग नाग कुमारनो, पोमावै संयुत्त ॥ सप्तफणे धाणि शिरधरे, सुर सेवे नित्यानित्य ॥ ३ ॥ सिद्धि वधू संगम सुजस, जो कीजे मन आस ॥ तो प्रभु समरथ सेवियें, श्री शंखेश्वर पास ॥ ४ ॥
(॥ छंदचाल ॥) सेवोश्री जिणंदपाय, दीठे दुःख दूर जाय. आणंद अधिक थाय, संपति मिले ॥ नयण निर्मल थाय, सेवक वंछित पाय, अहर्निशे गुणगाय, आरति दमे ॥ प्रभु त्रूटो दीये शिव सिद्धि, मान बहुत यश रिद्धि, सकल संयोग मिले, रंग भरे ॥ पूजो श्री जिणंद पास, पूरे मन केरी आश, अगर कपूर वास, कुसुम भरे॥५॥
(॥ दुहा ॥) सतरभेद सुविधें करी पूजे समकित धार ॥ अंगोपांगे उपदेशा, नमणादिक निरधार ॥ ६॥ नवो सुजिणंद अंग, लहो आणि चीर चंग, आं

गि रचो नव रंग,विवहपरें ॥ केसर सूखंड करी, कनक कचोली ज्ञरी, ज्ञलो ज्ञाव भरी, दाहिण करे ॥ अति खांतिखपकरी, विचित्र विवरी, अवि नय दूरकरी, ज्ञगति ज्ञरें ॥ पूजो श्री जिणंद० ॥ ७

(॥ दुहा ॥) साचुंए सोहामणो थंज्ञण पुर श्रीपास॥मूरति रातिकरि वंदियें, श्रीशंखेश्वर पाश ॥ ८ ॥ वंदुंश्री विनयपूरि, प्रज्ञात उगते सूर, वाजंत पटह ज्ञेरि, रुणझुणे ॥ गाओ श्री चतुर नर, अज्ञिनव सुर तरु, प्रज्ञावती राणविर, आदरघणे ॥ जोडी सुमस्तकें हाथ, शिवपुर शुद्ध साथ, प्रणमुं अनाथ नाथ, ज्ञगतिज्ञरे ॥ पूजोश्री जिणंद० ॥ ९ ॥

[॥दुहा॥] जरासिंधु यादव प्रतें, जरा जर्ज्जर कियजाम ॥ पाश शंखेश्वर प्रगटिया, पाय पखालण ताम ॥ १० ॥ सदा सुसमर वीर, नलागे तोमर तीर. जसु नामे थाये धीर, सुज्ञटकटा ॥ हिंसे गजवर घाट, बिरूद ते बोले ज्ञाट, शोहति सोवन घाट करेते घटा ॥ जेहनी प्रशास्तिपास, संपत्ति सुय धरितास, वयण सुवास वास, लक्ष्मी करे ॥ पूजोश्री० ॥ ११ ॥

कलश (॥ छपय ॥) लक्ष्मी करे विलास, आश सघली संपूरे ॥ पोमावै धरणिंद, पाश सब संकट चूरे ॥ केवल दंसण नाण, सुख वलि चारे अनंता ॥ सब लहियें मन शुद्ध, जसु पय सेव करंता॥ देवाधिदेव स्वामी सकल, पारशनाथ हियेनें धरे ॥ कवि कहे चउविह संघने, सुप्रसन्न स्वामी शंखेश्वरे ॥ १२ ॥ इति समाप्त ॥

॥ अथ अभीझरा पार्श्वनाथछंद लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ उठि प्रज्ञातें अज्ञिझरो, जपो ज्ञलिपरें जाप ॥ कष्ट टलें कारज सरे, प्रलय जाय सब पाप ॥ १ ॥ ऊठि प्रज्ञातें अभिझरो, जपे ज्ञलिपरें जेह ॥ संपत्ति आवे घर सही, दुःख न आवे देह ॥ २ ॥ प्रज्ञातें ऊठी प्रथम, पहिलो प्रणमे पाश ॥ धारे जेहनी धारणा, एहनी पूरे आश ॥ ३ ॥ संध्या वेला साहिबो, समरे मुखथी सोय ॥ रयणीजे धारे हृदे, हाजर उज्ञो होय ॥ ४ ॥

छंद प्रभाती ॥ अमीझरो प्रभु भेटण आवो, पूजो प्रभुनें जिम
ावो ॥ ध्यानप्रभुनुं नित्ये ध्यावो, गुणीजनना गुण रंगे गावो
॥ प्रथम प्रभु पूजो प्रभातें, भलां केशर लेइ भलिभातें ॥ खि
..त करियें मननी खांते, सेवक पर वाधे शुभ शांते ॥ ६ ॥ धूप
दीवो प्रभु आगें धरियें. कुनस मन शुद्ध जइ करियें॥ भलां फूल
प्रभु शिरपर भरियें, दारिद्र पणुं जाय खारे दरियें ॥ ७ ॥ महियल
मांहे प्रभु तुं मोटो, तुज समरच्या कदी नावें त्रोटो ॥ धणिय शिरवहे
मानो घोटो, खरो तुं बीजो सर्व खोटो ॥ ८ ॥ धणिआपुंजे ताहरुं
धारे, सहस गमें तुं कारज सारे ॥ विग्रह होय ते दूरें वारे, आवी
भीडें पार उतारे ॥ ९ ॥ आव्योछुं प्रभुनी करि आशा, पूर मनोरथ
वंछित पासा ॥ दीजे प्रभुजी वेगें दिलासा, तुमे हिवे श्या जूवो तमा
सा ॥ १० ॥ अमीझरा प्रभु सुनजर आणो, राजासरिखो तुं शिर राणो ॥ तो
हिवे लांबी किम तुमे ताणो मुजने प्रभु सेवक समजाणो ॥ ११ ॥ सुनजर क
रि तें मुजपें साची, रह्योछुं तुम नामे राची ॥ जिनजी सेनक करो अजाची,
पीडा टालो तननी साची ॥ १२ ॥ धणिय पणुं जो बिरुद धरावो, अ
म उपरालें प्रभुजी आवो ॥ शुं हिवें मुझथी झाकूं कहावो, वातडीयें
बाला बतलावो ॥ १३ ॥ धूरहूंतीमें एती धारी, प्रभुजी प्रीतिछे मुज
प्यारी ॥ वाल्हा मुजनें मुक्यो विसारी, वामासुत ऊपर हूं वारी ॥ १४ ॥
तो हूं जाणुं पाड तुमारो, नजर थकी मत करजो न्यारो ॥ तनमें भजन छे
एक तारो, धुरथी ध्यानमें तारो धारच्यो ॥ १५ ॥ गर्जोप्रभु तुं डोया
गामें, माहियल वाधछि तुज मामें ॥ नवनिध पामें ताहरे नामे, नामे
सीजें वंछित कामें ॥ १६ ॥ मीठा जेवा साकर मेवा, सलुणी तेम ताहरी
सेवा ॥ हर्ख हुओ प्रभु मुजनें हेवा, दीजे प्रभुजी वंछित देवा ॥ १७ ॥

॥ कलश अरिल्ल ॥ देवदेख्यो देवदेख्यो, प्रगट पुनम चंदए ॥
अमीझरो जगमां अधिको, फेडण मोटा फंदए ॥ सुख करणोदुःखहरणो, आ
श पूरण प्रभु पाशए ॥ नजर हमारी करो निर्मली,एती पूरो आशए॥१८॥

॥ अथ श्री गोडी पार्श्वनाथनुं छंद लिख्यते

॥ दुहा ॥ गोडी गिरुओ गाजतो, धवलो धींगडमल्ल ॥ अ पूरण पूरवा, जग जयवंत अमल्ल ॥ १ ॥ सुखसाधे वाधे धने, कीर्ति कल्याण ॥ मन नेडो गोडीधणी, राखे जेह सुजाण ॥ २ ॥ जाणवो जग जेहनो, जागंतो यक्षराज ॥ सामी समरण सासतां, सँकल सुधारे काज ॥ ३ ॥ पासपसायें परगडा, पामीजे गह गट्ट ॥ वैरीने वेगें दली, उडाडे दहवट्ट ॥ ४ ॥ परें परें परता पूरवे, विघन विडारे यक्ष ॥ थाये थलरो ठाकरो, पलक मांहे प्रत्यक्ष ॥ ५ ॥

॥ सारसी छंद ॥ प्रत्यक्ष आवे लछिलावे, लीलाथावे हित धरी ॥ उगंते भाणें गुण वखाणें, विमल ध्यान रसेकरी ॥ पूजंता देहे अति सनेहे, जेहनें नारी नरा ॥ ते दीयो गोडी ऋद्धि रुडी, शत्रु खंडे माहरा ॥ ६ ॥ जे चारुचित्तें भूरिभत्ते, स्तवे नित्यें गुणभणी ॥ मन हर्ष आणी भक्त जाणी, अवधिनाणी अहिधणी ॥ चढी नील घोडे तुरत दोडे, मुंड मरडे चाहरा ॥ ते दीयो० ॥ ७ ॥ आअनुर आगे अवरभागे, ज्योति जागे जेहनी, दुखरोग टाले भक्त पालें, द्रग निहाले नेहनी ॥ निरोग काया जस सवाया, पूरी आया धन धारा ॥ तेदीयो० ॥ ८ ॥ सुलतान सारा भट अटारा, भाट जाटा कन फटा ॥ दरवेश शेष अशेष असुरा, भोगी जोगी जो गटा ॥ मुखठाण आण प्रमाण जेहनी, करे सघला सुरवरा ॥ ते दीयो० ॥ ९ ॥ पटकूल घोटा कनक कोटा, करट मोटा मेलवे ॥ मिली लोक पाटें वाट घाटें, भाट कीराति केलवे ॥ आनंद वामानंद दिनादिन, जप वाणी विस्तरा ॥ तेदीयो० ॥ १० ॥ सुख सयल अंगे सजन संगे, सदा मंगल गावना ॥ संतान साथी जिसा हाथी, जस मयाथी अतिवणा ॥ जेहने दीठें अमीय तुठे, कदि न दूठे खेचरा ॥ तेदीयो० ॥ ११ ॥ सुखडी सवारी सरस भारी, अति घणी आवीमिले ॥ भरपूर भोजन चारु व्यंजन, चित्त रंजन

टले ॥ नवे नवे लेखें सुख अलेखें, मेलवे जग दिसरा ॥ ती० ॥ १२ ॥ नविरोग रोले जलन बोले, अग्नी लगे ते ठवे ॥ नवि चोर मूसें फणी न फरसें, सुखसें रण जयवरे ॥ गज अरु ज्युंउन्ना सिंहथंना, जपे जस नामे खरा ॥ तेदीयो० ॥ १३ ॥ सबईत मरकी जाय जडकी, रहे न अडकी अववडी ॥ जिन हाथ जोडी नाथ गोडी, शरण लाधी ओरडी ॥ परिवार मोटा वधे घोटा, दीन खोटा किंकरा ॥ तेदीयो० ॥ १४ ॥ जिणवाट कांटा विकट फांटा, जलन छांटा सामटा ॥ एह चोर कट्टा जट्ट घट्टा, वाट लूंटे लंपटा ॥ जस यक्ष नेडा निपट डेरा, करे संघ सेवंकरा ॥ तेदीयो० ॥ १५ ॥ मातंग माता तेजी ताता, रथिउन्नता संघपती ॥ जरचा ऊंडा डेरा चले सवेरा, नरवराने बहु जती ॥ आवे दुवारें जस जुहारें, उतारे जव सागरा ॥ तेदीयो० ॥ १६ ॥ जस उच्च कोटे फूट लोटे, रहे रवि शशि लटकता ॥ गयण अटता थाक घटता, करे मानु अटकता ॥ मन आश मोटी कदीन खोटी, देखतां जस देहरा ॥ तेदीयो० ॥ १७ ॥ जस कांन कुंडल सूरज मंडल, ताप उंडेल खंडवा ॥ राहसें लडिया मानु अडिया, अट चंचलता छंडवा ॥ शिर मुकुट नीको प्रगट टीको, ठीक ठावे जूधरा ॥ तेदीयो० ॥ १८ ॥ फल्यो कल्प शाखी जगत आखी, अखय ओपी नामना ॥ गुण अमृत चाखी रंग लाखी, करिय जाखी कामना ॥ देदार दाखो लाज राखो, गुनह साखी माहरा ॥ तेदीयो० ॥ १९ ॥ पूरवे पूरसा दाणी आसा, ए विसासा जासता ॥ तोदीयो दिलासा कहिये जासा, सुख विलासा सासता ॥ ओरकूं न मानु एह जानु, अचलजानुकूं आसरा ॥ तेदीयो० ॥ २० ॥ ॐ आर्हिं श्री गोडी मंत्र जोडी, पार्श्वनाथ नामे जपे ॥ मन कामसिद्धि सकल रिद्धि, कुशलवृद्धि जग तपे ॥ उवज्झाय जावे विजय गावे, जाणे जाण वंछित वरा ॥ तेदीयो० ॥ २१ ॥

॥ कलश छपय ॥ वंछित पूरण वाहरे, तुंधाये धींगड मल्ल ॥ निः

कारण वैरी नडे, ते साहिब टालो सह्व ॥ तस्कर खल खुनीतणा रडो मान मरट्ट ॥ चूरण जिम चकचूरिने, उडाडो दह वट्ट ॥ नाथ नाथ तुम आसरो, सुप्रसन्न हो सेवक जणी ॥ श्रीपार्श्व गोडीस धर, एकल मल्ल तुं अमधणी ॥ २२ ॥

॥ अथ पंदर तिथि बर्नन छंद लिख्यते ॥

सकल विद्यावर दायनी, श्री श्री सरस्वती माय ॥ अहर्निशि तेहना नेहसूं, हुं प्रणमु जिन पाय ॥ १ ॥ तास पसाए गायसूं, पंदरे तिथि शुभ वार ॥ मत्सर सुं कहेतो नथी, माहरी मति अनुसार ॥ ॥ २ ॥ पडवा कूप संसारमां, नव इच्छो को प्राणि ॥ तो सेवो श्री साधुने, निर्मल माति आति आणि ॥ ३ ॥ बोध बीज तुज आ· पशे, वली केहशे मर्म ॥ दुर्गति पडतो राखशे, शिखवशे शुभ धर्म ॥ ४ ॥ त्रिजग मांहे को नथी, एहवो को उपगारि ॥ ग्रंथविना जे शीखवे, संयम मति आति सारि ॥ ५ ॥ चिहुंगति मांही आ· तमा,. भम्यो अनंती वार ॥ विविधपरें दुःख भोगव्यां. नवि. पा म्यों भव पार ॥ ६ ॥ पांच इंद्रिय अरि आपणा, पहेला ते वश कीजें ॥ चार कषाय निवारियें, कोयनें दोष न दीजें ॥ ७ ॥ छकाय भलिपेरें राखियें, निज आतमने तोले ॥ कुटुंब सहुए आपणा, इम श्री जिनवर बोले ॥ ८ ॥ सात मिल्या नवि चालियें तेतो कुव्यसन जाणो ॥ सदगुरु केरी शीखडी, ग्रही ज्ञानज आणो ॥ ९ ॥ आठ मद इंद्रिय तणा, जंपो जिन साखे ॥ मन वंछित फल पामशो, पर प्राणी राखे ॥ १० ॥ नव वाडे विशुद्धसुं, जे ब्रह्म चर्य पाले ॥ ते धीरा संसारमां, भव फेरा टाले ॥ ११ ॥ दश विध धर्म यति तणो,. सेवो मन शुद्धे ॥ आराधो अरिहंतनें, भाइ निर्मल बुद्धे ॥ १२ ॥ एकादश पडिमा वहे, श्रावकनी सार ॥ संतोषी सुख पामशे, मानो. ते निरधार ॥ १३ ॥ द्वादस अंग सिद्धांतमा, इम जिन वर बोले ॥ सुमति गुप्ति जे सेवशे, नहीं को तस तोले ॥

४ ॥ ते रसलीणा जे रमे, धन्य ते नर नारी ॥ वार वार वंदु, तस हूं बलि हारी ॥ १५ ॥ चौद राजमां जीवडो, जम्यो अंति वार ॥ कुगुरु कुदेवें जोलव्यो, नवि पाम्यो पार ॥ १६ ॥ पुण्ये मिल्या हिवे सदगुरु, सांही सेवो चरण ॥ जवनो पार उतारशें, सदगुरु तारण तरण ॥ १७ ॥ सदगुरु बिरुद वहे सदा, पर तारण काजा ॥ दुर्गति पडतो राखियो, परदेशी राजा ॥ १८ ॥ ए आदि बहू उद्धरचा, केता हुं कहुं ॥ पंडित होयते पीछजो, थोडामां बहु ॥ १९ ॥ पंदर तिथिमां प्राणिया, नित्य सुकृत कीजें ॥ दान शीयल तप जावना, करी लाहो लीजें ॥ २० ॥ ध्यान धरीजें धर्मनु पोहोचे मन आश ॥ हर्ष धरी सुणजो सहू जिम पामो शिव वाश ॥ २१ ॥

॥अथ पद्मावतीदेवीको छंद लिख्यते॥

॥श्लोक ॥ श्रीमत्कालि कुंड दंडे ॥ श्रीपार्श्वनाथ संस्तवे ॥ धरणेंद्र सचिवं साकं ॥ धर्म कामार्थ सिद्धए ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा, सहित गिरिमां, महितल महिमा, विस्तरणी ॥ धरणीधर राणी, तुं जगजाणी, जवियण प्राणी, जय हरणी ॥ शिष्यने जयकारी, समकितधारी, तुं साचारी, शीलवती ॥ संतुष्टा जवमें, देवीपद्मे, मातागिरिमा. जैनमती ॥ १ ॥ नागणि सम काली, जितकरवाली, ऊाक जमाली, वेणवती ॥ जितमीन कपोली, सेंथो फोली, आड अमूली, शिर धरती ॥ तिलकांकित जाली, पीयल आली, जूषण माला, जाग्यावती ॥ सं० ॥ २ ॥ कंचन सम वरणी, सकलाजरणी, शीतल करणी, सोममुखी ॥ गल्यो नित मुजल काने कुंडल, जित रविमंडल, कमलाक्षी ॥ गयणांगण गयणी, विकासित नयणी, अविचल वयणी. प्रीयमुखी ॥ सं० ॥३॥ नासा आणियाली. अधरपरवाली. जीजरसाली, निरदोसी ॥ दाडिम कण दंती, मधुर लवंती, निजगुण थुणंती, तानरखी ॥ जीत किन्नरवादी, सुस्वरनादी. जिनगुण लाधी, रागवती ॥ सं० ॥ ४ ॥ करिकर जुज दंडी, मंडीत चूडी, गंजिर उंडी, नाजिजरी ॥ उर उन्नत सारा, कंचूकी धारा, विलसित

हारा, कृष्णोदरी ॥ कटीमेखल करणी, हरिकटि हरणी. कुंजर चरा सगती ॥ सं० ॥ ५ ॥ पुष्पांबर वस्त्री. रूपविचित्री, राजत छत्रे, राज्यवत हस्तायुद्धमाना, कुर्कटयाना, पान सुफाना, पुन्यवती ॥ पेहेरण पटकुली, णा चोली, नील कपोली, संचरती ॥ सं० ॥ ६ ॥ हुं मतिलववासी, तुजगुण राशी, मुजकुं त्रासी, पूरण मती ॥ तुम. विण नवि जाचुं, मानो साचुं, दे वरदातुं, दानवती ॥ आवी अवतरजे, महिर करजे, समरयां करजे सार मती ॥ संतुष्टा० ॥ ७ ॥ निज सेवकरे जे, वंछित दिजे, हेज करिजे, हे न वती ॥ संतान वधारे, कुल वारे, धर्म सुधारे, धर्म वती ॥ साजन मनरं जे, दुरिजन गंजे, आवठ भंजे, कामदूती ॥ सं० ॥ ८ ॥ वश अर्पित का मा, प्रागम. गरिमा, गुरुलघु अणिमा, सद्गुमती ॥ चंपक कृष्णागर, चंदन केसर, दीप मनोहर, भोगवती ॥ चिंतामणी मंत्री वासकर जंत्री, होम प हो पवित्री, पद्मवती ॥ सं०॥९॥ दव सायर पडिया, बंधन जडिया. अ ग्नि कणिया, उद्धरणी ॥ हस्ति हरि वाघण विषधर सापिणि, साकिणिडा किणि, निग्रहणी॥दुष्टामय हरणी, क्षुद्रा वरणी, रक्षा करणी. मात सती॥सं॥१०॥

॥ **कलश छपय छंद** ॥ अतियशवंत अपार. सदा जग साची देवी ॥ समकित पाले शुद्ध, श्रीजिनशासन सेवी॥अधो मध्य आकाश, रास रमंती अमरी ॥ सेवकजन साधार सार, करे मन समरी॥ फणिपति मंडित पार्स, प्रतिमा मस्तक धारणी ॥ हरख सागर कहे हरखमुं. पद्मावती पूजो सुख कारणी॥११॥

॥ इति छंद संग्रह भाग संपूर्ण. ॥

